नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 367, नई दिल्ली, शनिवार 07 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अनुशासन एक ऐसा तरीक़ा है जो उसमे कामयाब हो गया वो हर कार्य में जीत सकता है।

02 कामदेव और उनकी अर्धांगिनी रति।
06 सपनों की उड़ान: शिक्षिका और लेखिका डॉ. प्रियंका सौरभ
08 बौद्ध धरा पर आस्था और करुणा की साँस

ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन पंजीकृत की परिवहन आयुक्त से मुख्य समस्याओं के समाधान के लिए हुई बैठक

पिंकी कुंडू सह संपादक

टोलवा के पदाधिकारियों की परिवहन आयुक्त से मुलाकात हुई जिसमें टोलवा द्वारा जनहित जनकल्याण और व्यावसायिक वाहन मालिकों को आने वाली परेशानियों पर विस्तृत चर्चा हुई।

टोलवा द्वारा इस सौहार्दपूर्ण माहौल में सम्पन्न हुई बैठक में परिवहन आयुक्त को निवेदन कर दिल्ली की जनता और व्यवसायिक वाहन मालिकों को परिवहन विभाग की नीतियों से आ रही ज्वलंत परेशानियों का समाधान करने हेतु विस्तृत चर्चा की।

ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन की महासचिव ने बताया की परिवहन आयुक्त द्वारा निम्नलिखित समस्याओं का नियम एवं कानून के अनुसार 15 दिनों में निदान की बात कही है।

बैठक के अंतर्गत चर्चा के मुख्य मुद्दे निम्नलिखित रहे:

1. ई-वी 3-पहिया (6 सवारी क्षमता) वाहनों के व्यावसायिक गतिविधियों में पंजीकरण प्रक्रिया प्रारंभ करना: इन पर्यावरण अनुकूल वाहनों का व्यावसायिक उपयोग दिल्ली की यातायात व्यवस्था को मजबूत करेगा।

वर्तमान में पंजीकरण की अनुपस्थिति से ऑपरेटरों को कठिनाई हो रही है।

2. दिल्ली में राजपत्रित अधिसूचना द्वारा पूर्व में संचालित परिवहन विभाग की विलय शाखाओं को पुनः खोलना: बिना पूर्व सूचना के शाखाओं का विलय होने से जनता एवं वाहन मालिकों को असुविधा हो रही है। राजपत्रित अधिसूचना के अनुपालन में इन्हें पुनः संचालित किया जाए ताकि स्थानीय स्तर पर सेवाएं सुगम हों।

3. दिल्ली में बाहरी राज्यों में पंजीकृत वाहनों के स्क्रैप डीलरों हेतु जनजोत पोर्टल को ध्यान में रखते हुए नियमावली बनाना एवं जोड़ना: वाहन स्क्रैपिंग नीति के अनुरूप बाहरी राज्यों के पंजीकृत वाहनों के लिए जनजोत पोर्टल का एकीकरण आवश्यक है। इससे स्क्रैप प्रक्रिया पारदर्शी एवं कुशल बनेगी।

4. दिल्ली में तकनीकी अधिकारियों के पदों पर कार्यरत गैर-तकनीकी अधिकारियों को हटाकर तकनीकी अधिकारियों की नियुक्ति: तकनीकी पदों पर गैर-तकनीकी अधिकारियों की तैनाती से वाहन निरीक्षण एवं अनुमोदन प्रक्रियाओं में विलंब हो रहा है। शीघ्र तकनीकी विशेषज्ञों की नियुक्ति सुनिश्चित की जाए।

ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन पंजीकृत के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवम्-महासचिव इस बैठक में उपस्थित रहे।

अध्यक्ष ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन [परिवहन नीति विश्लेषक]
09811732095,
9599232095
tolwadelhi@gmail.com

परिवहन मंत्री माननीय डॉ पंकज सिंह से दिल्ली परिवहन मजदूर संघ की बैठक हुई संपन्न

परिवहन विशेष न्यूज

दिनांक 06 मार्च 2026 को दिल्ली परिवहन मजदूर संघ के प्रतिनिधिमंडल ने अपनी मांगों के समर्थन में माननीय परिवहन मंत्री डॉ. पंकज सिंह जी से मुलाकात कर विस्तृत चर्चा की।

इस बैठक में भारतीय मजदूर संघ, दिल्ली प्रदेश के (महामंत्री) डॉ. दीपेंद्र चाहर जी, भारतीय परिवहन मजदूर महासंघ के संगठन मंत्री श्री कैलाश चंद मलिक जी, दिल्ली परिवहन मजदूर संघ के अध्यक्ष श्री गूगन जी, कार्यकारी अध्यक्ष श्री विनोद मलिक जी, महामंत्री श्री भानु भास्कर जी तथा मंत्री श्री विकास शर्मा जी उपस्थित रहे।

बैठक के दौरान 27 फरवरी 2026 को दिए गए ज्ञापन के संबंध में विस्तारपूर्वक चर्चा हुई। प्रतिनिधिमंडल ने निम्न प्रमुख मांगों को मंत्री महोदय के समक्ष रखा-

1. अनुबंधित कर्मचारियों को स्थायी किया जाए

2. डीटीसी का बेड़ा मजबूत करने के लिए निगम की अपनी बसें बढ़ाई जाएं और निजीकरण को रोका जाए।

3. सेवानिवृत्त कर्मचारियों की पेंशन का स्थायी समाधान किया जाए, जिससे उन्हें समय पर पेंशन प्राप्त हो सके।

4. सेवारत व सेवानिवृत मेडिकल कैशलेस स्कीम पर भी बात हुई

माननीय परिवहन मंत्री डॉ. पंकज सिंह जी ने प्रतिनिधिमंडल की बातों को के लिए सकारात्मक हल करने का आश्वासन दिया। उद्योग हितता से सुना और समस्याओं के समाधान हेतु विश्वास दिलाया।

अगर आप भारत देश में निम्नलिखित कार्यों में जनहित को समर्पित है तो आप भी प्राप्त कर सकते हैं 'परिवहन विशेष' समाचार पत्र के तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह में सम्मान

"सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा"
आज ही अपना आवेदन प्रक्रिया पूरी करे, यह बिल्कुल निशुल्क है,
अगर आपकी प्रतिभा इसे प्राप्त करने में सक्षम है तो आवेदन करे
https://forms.gle/6tTqg7JX4EHGy2Cw9
मुख्य संपादक (परिवहन विशेष)

तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह - 2026
परिवहन विशेष
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र
सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा
के जनहित कार्यों को समर्पित
सड़क सुरंक्षा
महिला सुरक्षा
प्रदूषण
साइबर अपराध
अगर आप इन क्षेत्रों में जनहित को समर्पित हैं और आपकी प्रतिभा सक्षम है,
तो आप भी प्राप्त कर सकते हैं सम्मान। आज ही बिल्कुल निशुलक आवेदन करें।
दिनांक: 29 मार्च (रविवार) समय - दोपहर 1 बजे 5 बजे तक।
स्थान - कंस्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली, 110001
आवेदन प्रक्रिया
https://forms.gle/6tTqg7JX4EHGY2Cw9
मुख्य संपादक - परिवहन विशेष

पर्यटन परिवहन की समस्याओं को लेकर टीम ए.आई.एम.टी.सी. की पहल

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। डॉ. हरीश सभरवाल, राष्ट्रीय अध्यक्ष व टीम आल इंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट काँग्रेस तथा डी सी बी ए ने केंद्रीय पर्यटन मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत जी से मुलाकात कर राजस्थान में छोटे टुरिस्ट वाहनों पर लगेज कैरियर प्रतिबंध और उत्तराखंड राज्य में चार धाम यात्रा में बाहरी राज्यों के वाहनों के साथ ग्रीन कार्ड को लेकर भेदभाव का मुद्दा उठाया।

डॉ हरीश सभारवाल जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष, आल इंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट काँग्रेस (ए.आई.एम.टी.सी) ने केंद्रीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत जी से मुलाकात कर देश के पर्यटन परिवहन क्षेत्र से जुड़े दो महत्वपूर्ण मुद्दों पर उनका ध्यान आकर्षित किया और टूरिज्म में हो रही कमी एवं पर्यटकों को हो रही असुविधा तथा राष्ट्रीय रेवेन्यू में हो रही क्षति के लिए शीघ्र समाधान हेतु हस्तक्षेप का अनुरोध किया।

बैठक के दौरान डॉ. सभरवाल ने मंत्री महोदय को बताया कि राजस्थान में पर्यटक वाहनों पर रूफ-माउंटेड लगेज कैरियर (छत पर यात्री सामान रखने की व्यवस्था) को अचानक बंद कर दिए जाने से पर्यटन वाहन संचालकों, विशेषकर छोटे वाहनों जैसे अर्बानिया, टेम्पो ट्रैवलर और टोयोटा क्रिस्टा आदि के ऑपरेटरों को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

उन्होंने कहा कि इन छोटे पर्यटक वाहनों में यात्रियों के सामान के लिए पर्याप्त आंतरिक स्थान उपलब्ध नहीं होता, ऐसे में लगेज कैरियर पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने से पर्यटन संचालन में गंभीर व्यावहारिक समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। कई स्थानों पर पर्यटक वाहनों को रास्ते में रोका जा रहा है, जिससे संचालकों के साथ-साथ देशी-विदेशी पर्यटकों को भी असुविधा और अनावश्यक परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

डॉ. सभरवाल ने स्पष्ट किया कि ए.आई.एम.टी.सी बसों में अवैध वाणिज्यिक माल ढुलाई के लिए यात्री वाहनों के दुरुपयोग का कड़ा विरोध करता है और सरकार के इस उद्देश्य का पूरा समर्थन करता है। किंतु पर्यटकों के वैध सामान को ले जाने की अनुमति देना पर्यटन संचालन का एक आवश्यक हिस्सा है। इसलिए छोटे पर्यटक वाहनों में यात्रियों के सामान के लिए रूफ-माउंटेड लगेज कैरियर की अनुमति दी जानी चाहिए ताकि पर्यटन गतिविधियां सुचारु रूप से चल सकें।

इस अवसर पर डॉ. सभरवाल ने मंत्री महोदय का ध्यान उत्तराखंड में होने वाली चार धाम यात्रा के दौरान अन्य राज्यों में पंजीकृत पर्यटक वाहनों के साथ किए जा रहे कथित भेदभाव की ओर भी आकर्षित किया। उन्होंने बताया कि वर्तमान में उत्तराखंड में पंजीकृत वाहनों को छह माह की ग्रीन कार्ड वैधता दी जाती है, जबकि अन्य राज्यों के वाहनों को केवल 15 दिन की वैधता दी जाती है, जिससे देशभर से आने वाले पर्यटन ऑपरेटरों को बार-बार आवेदन और शुल्क भुगतान की प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है।

उन्होंने कहा कि यह व्यवस्था व्यावहारिक नहीं है क्योंकि चारधाम यात्रा जैसी लंबी और कठिन यात्रा को 15 दिनों में पूरा करना अक्सर संभव नहीं होता। इससे ऑपरेटरों पर अनावश्यक आर्थिक बोझ पड़ता है तथा यात्रियों—विशेषकर बुजुर्गों और महिलाओं—को भी असुविधा होती है।

एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि पहाड़ी रास्ते व उनके कथित द्वार कई दफा मौसम या लैंडस्लाइड के चलते अचानक बंद करने पड़ जाते हैं और मिनी बसों द्वारा चलती यात्रा लेट हो जाती है, उस स्थिति में 15 दिन की ग्रीनकार्ड की वैधता रस्ते में ही समाप्त हो जाती, और शेष यात्रा में ग्रीन कार्ड valid न होने से इंश्योरेंस की नज़र से भी असंवैधानिक मानी जाती हैं।

अगले ट्रिप के लिए भी जो 48 घंटे पहले अप्लाई करना कई बार संभव नहीं हो पाता, जिसके फलस्वरूप यात्रियों के होटल व हेलीकॉप्टर की बुकिंग जाया चली जाती है, आर्थिक नुकसान के इलावा यात्रियों को बिना वजह की बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ता है।

डॉ हरीश सभारवाल जी ने माननीय श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत से अनुरोध किया गया कि पर्यटन क्षेत्र के हित में दोनों मुद्दों पर संबंधित राज्यों से समन्वय कर व्यावहारिक और संतुलित समाधान सुनिश्चित कराया जाए, ताकि देशभर से आने वाले पर्यटक वाहन संचालकों सम्मानजनक व्यवहार मिल सके तथा पर्यटन गतिविधियों को प्रोत्साहन मिल सके।

माननीय श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत जी ने विश्वास दिलाया कि इन मुद्दों का शीघ्र समाधान होगा और देश में पर्यटन परिवहन व्यवस्था को और अधिक सुगम व व्यवस्थित बनाया जा सकेगा।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार : "'डिजिटल अरेस्ट' ? क्या सच में कोई आपको ऑनलाइन अरेस्ट कर सकता है?

नहीं। "डिजिटल अरेस्ट" एक साइबर फ्रॉड है। स्कैमर लोगों को पैसे देने या पर्सनल डिटेल्स शेयर करने के लिए डराने के लिए RBI, पुलिस या सरकारी एजेंसियों के नाम का गलत इस्तेमाल करते हैं।

हमेशा याद रखें:

* अरेस्ट ऑडियो/वीडियो कॉल या मैसेज से नहीं होते
* फाइनेंशियल/पर्सनल जानकारी शेयर न करें
* हमेशा कॉल करने वाले की असलियत वेरिफाई करें
* शक होने पर अपने बैंक से कॉन्टैक्ट करें

जानकारी रखें। सुरक्षित रहें।

साइबरक्राइम हेल्पलाइन 1930 या www.cybercrime.gov.in पर तुरंत रिपोर्ट करें

ज़्यादा जानकारी के लिए कृपया यहां क्लिक करें: https://rbikehtahai.rbi.org.in/

RBI कहता है, जानकर बनाइए, सतर्क रहिए

WhatsApp नोटिफिकेशन बंद करने के लिए 'stop' टाइप करें।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

"निधन/मृत्यु केअज्ञात कारण (Cause of death is Unknown Etiology)" के पीछे छिपी महामारी

आधुनिक जनस्वास्थ्य संकटों की छाया में एक अत्यंत चिंताजनक किंतु प्रायः अनदेखी रहने वाली महामारी निरंतर फैलती जा रही है। अनेक समाजों में—विशेषकर भारत जैसे विकासशील देशों में—लाखों लोग प्रतिदिन सस्ते सड़क किनारे मिलने वाले खाद्य पदार्थ, मिलावटी शीतल पेय और अवैध रूप से निर्मित शराब का सेवन करते हैं।

ये वस्तुएँ देखने में साधारण और आकर्षक प्रतीत होती हैं, परंतु इनमें अक्सर विषैले रसायन और खतरनाक सूक्ष्मजीव छिपे होते हैं, जो अनजाने में शरीर में प्रवेश कर जाते हैं।

इसके परिणाम अत्यंत विनाशकारी हो सकते हैं।

पीड़ित व्यक्तियों में
गंभीर जठरांत्र रोग,
तंत्रिका तंत्र की क्षति,
यकृत (लिवर) विफलता,
गुर्दों की क्षति

और कई अंगों के एक साथ निष्क्रिय होने जैसी स्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं।

फिर भी अनेक मामलों में मृत्यु का वास्तविक कारण स्पष्ट नहीं हो पाता।

सीमित चिकित्सीय इतिहास, आपस में मिलते-जुलते लक्षणों और पर्याप्त जांच सुविधाओं के अभाव के कारण चिकित्सकों को प्रायः मृत्यु प्रमाण पत्र में "अज्ञात कारण (Unknown Etiology)" लिखने के लिए विवश होना पड़ता है।

यह शब्द किसी प्रकार की चिकित्सीय लापरवाही या जिम्मेदारी से बचने का प्रयास नहीं है, बल्कि यह विषाक्त पदार्थों के जटिल प्रभावों तथा जनस्वास्थ्य व्यवस्था, फॉरेंसिक जांच और निगरानी प्रणाली में मौजूद कमियों की वास्तविकता को दर्शाता है।

तीन प्रमुख खतरनाक स्रोत

1. अस्वच्छ स्ट्रीट फूड और दूषित नाश्ते

भारत सहित अनेक देशों में सड़क किनारे मिलने वाला भोजन सामाजिक और आर्थिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इससे लाखों लोगों को रोजगार मिलता है और बड़ी संख्या में लोगों को सस्ता भोजन उपलब्ध होता है।

किन्तु स्वच्छता की कमी, अनुचित भंडारण और दूषित पानी के उपयोग के कारण यही भोजन कई बार गंभीर बीमारियों का कारण बन जाता है।

अस्वच्छ वातावरण में तैयार भोजन में कई प्रकार के खतरनाक सूक्ष्मजीव पाए जा सकते हैं, जैसेः

Escherichia coli
Salmonella
Campylobacter
Leptospira
Vibrio

ये सूक्ष्मजीव तीव्र गैस्ट्रोएंटेराइटिस उत्पन्न कर सकते हैं, जिसके लक्षण हैंः

तेज दस्त,
उल्टी,
पेट दर्द
और गंभीर निर्जलीकरण।

गंभीर परिस्थितियों में संक्रमण रक्त में फैलकर सेप्टीसीमिया का रूप ले सकता है, जो जानलेवा हो सकता है।

E. coli की कुछ विशेष प्रजातियाँ हीमोलिटिक यूरेमिक सिंड्रोम उत्पन्न करती हैं, जिसमें

गुर्दों की विफलता,
एनीमिया
और प्लेटलेट्स की कमी हो जाती है।

बार-बार दूषित भोजन के सेवन से आंतों में दीर्घकालिक सूजन, आंतों की सुरक्षा प्रणाली में कमजोरी और प्रतिरक्षा प्रणाली में विकार भी उत्पन्न हो सकते हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार असुरक्षित भोजन के कारण हर वर्ष विश्वभर में करोड़ों लोग खाद्यजनित रोगों से प्रभावित होते हैं। यह समस्या विशेष रूप से निम्न और मध्यम आय वाले देशों में अधिक गंभीर है।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि यह खतरा केवल गरीब या वंचित वर्ग तक सीमित नहीं है; कई बार शिक्षित और संपन्न परिवारों के लोग भी अनजाने में दूषित भोजन का सेवन कर लेते हैं।

2. मिलावटी शीतल पेय और रासायनिक रूप से दूषित पेय पदार्थ

दूसरा महत्वपूर्ण खतरा मिलावटी शीतल पेय और आइसक्रीम जैसे उत्पादों से जुड़ा हुआ है।

खाद्य सुरक्षा अधिकारियों की जांचों में कई अनियमित उत्पादन इकाइयों में अत्यंत चिंताजनक कुप्रथाएँ सामने आई हैं। कुछ मामलों में उत्पादों की बनावट सुधारने या लागत कम करने के लिए उनमें डिटर्जेंट पाउडर, कृत्रिम झाग उत्पन्न करने वाले रसायन और अत्यधिक फॉस्फोरिक एसिड मिलाया जाता पाया गया है।

ये पदार्थ मानव शरीर के लिए बिल्कुल भी सुरक्षित नहीं हैं।

इनके सेवन से निम्न समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैंः

दाँतों के इनेमल का क्षरण
कैल्शियम-फॉस्फोरस संतुलन में गड़बड़ी
गुर्दे की पथरी
ऑस्टियोपोरोसिस
भारी धातुओं का संचय

कृत्रिम रंगों और रसायनों से कैंसर का संभावित खतरा

इसके अतिरिक्त, अस्वच्छ उत्पादन प्रक्रिया के कारण पेय पदार्थों में बैक्टीरिया और फंगस भी विकसित हो सकते हैं।

इस प्रकार जो पेय पदार्थ ताजगी देने वाला प्रतीत होता है, वह वास्तव में विषैले रसायनों और सूक्ष्मजीवों का स्रोत बन सकता है।

3. अवैध शराब : सबसे घातक खतरा

इन सभी खतरों में सबसे अधिक घातक है अवैध रूप से निर्मित शराब का सेवन।

ऐसी शराब—जिसे आम भाषा में "हूच" कहा जाता है—अक्सर गुप्त स्थानों पर अत्यंत असुरक्षित और अवैज्ञानिक तरीकों से बनाई जाती है।

इसकी तीव्रता बढ़ाने और लागत कम करने के लिए इसमें कई बार औद्योगिक मेथेनॉल मिला दिया जाता है।

मेथेनॉल अत्यंत विषैला रसायन है। शरीर में प्रवेश करने के बाद यह फॉर्मल्डिहाइड और फॉर्मिक एसिड में परिवर्तित हो जाता है, जो गंभीर जैव रासायनिक विकार उत्पन्न करते हैं।

इसके प्रमुख दुष्प्रभाव हैंः

गंभीर मेटाबोलिक एसिडोसिस
ऑप्टिक नर्व की क्षति जिससे स्थायी अंधापन हो सकता है
केंद्रीय तंत्रिका तंत्र का अवसाद
श्वसन विफलता
बहु-अंग विफलता

प्रारंभिक लक्षण सामान्य शराब के नशे जैसे लग सकते हैं—जैसे हल्का उत्साह, चक्कर, मतली और उल्टी।

लेकिन बाद में रोगी में
दृष्टि धुंधली होना,
तेज सांस चलना,
दौरे पड़ना
और अंततः कोमा जैसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

इन लक्षणों की समानता के कारण इसे कई बार डायबिटिक कीटोएसिडोसिस या वायरल एन्सेफेलाइटिस जैसी अन्य बीमारियों से भ्रमित किया जा सकता है।

निदान की जटिल चुनौती

ऐसे मामलों में मृत्यु का वास्तविक कारण निर्धारित करना अत्यंत कठिन हो जाता है।

इसके पीछे कई कारण हैंः

1. अपूर्ण रोग-इतिहास

सामाजिक बदनामी के भय से कई लोग शराब सेवन की जानकारी छिपा लेते हैं, विशेषकर उन राज्यों में जहाँ शराब पर प्रतिबंध है।

2. लक्षणों की समानता

दूषित भोजन से होने वाले लक्षण कई बार मेथेनॉल विषाक्तता के प्रारंभिक लक्षणों से मिलते-जुलते होते हैं।

3. जांच सुविधाओं का अभाव

मेथेनॉल जैसे विषों की पहचान के लिए आवश्यक उन्नत परीक्षण—जैसे गैस क्रोमैटोग्राफी–मास स्पेक्ट्रोमेट्री (GC-MS)—अक्सर छोटे अस्पतालों या ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध नहीं होते।

4. चिकित्सालय में देर से पहुँचना

अनेक रोगी गंभीर अवस्था में ही अस्पताल पहुँचते हैं, जब शरीर के कई अंग पहले ही प्रभावित हो चुके होते हैं।

5. अन्य सहवर्ती बीमारियाँ

कुपोषण, मधुमेह और दीर्घकालिक संक्रमण जैसी समस्याएँ भी रोग की पहचान को और जटिल बना देती हैं।

इन परिस्थितियों में चिकित्सकों को मृत्यु प्रमाण पत्र में "कार्डियो-रेस्पिरेटरी फेल्योर : अज्ञात कारण" लिखना पड़ सकता है।

हाल के घटनाक्रम और बढ़ती जागरूकता (2025–2026)

पिछले कुछ वर्षों में मिलावटी खाद्य पदार्थों और अवैध शराब से होने वाली घटनाओं ने सरकारों और समाज का ध्यान इस गंभीर समस्या की ओर आकर्षित किया है।

मार्च 2026 में पंजाब के अमृतसर क्षेत्र में संदिग्ध अवैध शराब से कई लोगों की मृत्यु हुई और अनेक लोग अस्पताल में भर्ती हुए। ऐसी घटनाएँ भारत के विभिन्न क्षेत्रों में समय-समय पर सामने आती रही हैं।

इस समस्या को नियंत्रित करने के लिए भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (FSSAI) ने हाल के वर्षों में कई कठोर कदम उठाए हैं, जैसेः

खाद्य पदार्थों में रसायनों और मिलावट पर कड़े मानक

पेय पदार्थ एवं डेयरी इकाइयों की सघन जांच
मोबाइल फूड टेस्टिंग प्रयोगशालाएँ
छोटे निर्माताओं की निगरानी
मिलावट करने वालों के लिए भारी आर्थिक दंड और लाइसेंस रद्द करना

इसके साथ ही वैज्ञानिक प्रगति भी इस दिशा में सहायक बन रही है। शोधकर्ता अब ऐसे पोर्टेबल मेथेनॉल डिटेक्टर, स्मार्टफोन आधारित सेंसर और त्वरित रोगजनक पहचान किट विकसित कर रहे हैं, जो भविष्य में खाद्य सुरक्षा की निगरानी को अधिक प्रभावी बना सकते हैं।

आगे का मार्ग

"अज्ञात कारण" से होने वाली मौतों को केवल चिकित्सीय रहस्य मानकर अनदेखा नहीं किया जा सकता। यह वास्तव में जनस्वास्थ्य प्रणाली के लिए एक गंभीर चेतावनी है।

इस समस्या के समाधान के लिए आवश्यक हैः

खाद्य सुरक्षा कानूनों का कठोर पालन
अवैध शराब के नेटवर्क पर सख्त नियंत्रण
फॉरेंसिक और विष विज्ञान प्रयोगशालाओं का विस्तार
जनजागरूकता कार्यक्रम

खाद्यजनित और रासायनिक विषाक्तता की बेहतर निगरानी

सबसे महत्वपूर्ण है समाज को जागरूक बनाना ताकि लोग अपने भोजन और पेय पदार्थों के चयन में अधिक सावधानी बरत सकें।

निष्कर्षः "अज्ञात कारण" के रूप में दर्ज होने वाली अनेक मौतों के पीछे असुरक्षित भोजन, मिलावटी पेय पदार्थ और अवैध शराब का जटिल संबंध छिपा हुआ होता है।

ये समस्याएँ हमारे खाद्य तंत्र और जनस्वास्थ्य व्यवस्था की कमजोरियों को उजागर करती हैं।

यदि वैज्ञानिक नीतियों, तकनीकी नवाचार और जनजागरूकता के माध्यम से इन चुनौतियों का सामना किया जाए, तो अनेक रोकी जा सकने वाली मौतों को टाला जा सकता है।

दृढ़ संकल्प और सामूहिक प्रयासों के माध्यम से हम उस पर्दे को हटा सकते हैं जो आज अनेक मौतों के वास्तविक कारण को छिपाए हुए है—और भविष्य में अनगिनत जीवन बचा सकते हैं।

कैंसर सिर्फ एक बीमारी नहीं है, जीवन, परिवार, सुख-शांति और धन पर गहरा प्रभाव डालता है

अगर हम छोटी-छोटी आदतों के बारे में नहीं सोचते तब इसे रोकना बहुत कठिन हो जाता है। आज विश्व स्वास्थ्य संगठन (डबल्यूएचओ) और सबसे बड़े कैंसर शोध संस्थानों का नवीनतम विश्लेषण यही कहता है कि लगभग 40% कैंसर ऐसे हैं जिन्हें हम खुद अपनी जीवनशैली में बदलाव करके रोक सकते हैं।

कैंसर से बचने के लिए सबसे ज़रूरी बातें

1. धूम्रपान (सिगरेट/बीड़ी) और तम्बाकू यह सबसे बड़ा और सिद्ध कैंसर-कारक कारण है। धूम्रपान सीधे फेफड़े, मूँह, गले, ब्लड सर्विल कैंसर का जोखिम बढ़ाता है। तम्बाकू में मौजूद रसायन डीएनए को नुकसान पहुँचाकर कैंसर को जन्म देते हैं।

डबल्यूएचओ के अनुसार दुनिया भर के कैंसर का सबसे बड़ा कारण तम्बाकू उपयोग है।

क्या करें? अगर आज छोड़ना मुश्किल लगता है तो —

1. हेल्थ-क्लीनिक से सहायता लें
2. धीरे-धीरे उपयोग कम करें
3. परिवार के समर्थन से इसे बिल्कुल बंद करें

2. ऐल्कोहॉल/दारू अल्कोहॉल Group-1 carcinogen यानी कैंसर-जनित पदार्थ है। यह कम मात्रा में भी कैंसर का जोखिम बढ़ाता है — खासकर लिवर, पेट, गला और स्तन के कैंसर में। नवीनतम अध्ययन के अनुसार कोई सुरक्षित मात्रा नहीं है जब बात कैंसर की हो।

क्या करें? पूरी तरह बंद करना सबसे सुरक्षित है। कम से कम रोज़मर्रा की आदतों से हटाएं।

3. कोल्ड ड्रिंक्स और शर्करा-युक्त पेय कोल्ड ड्रिंक्स में अत्यधिक चीनी और केमिकल्स होते हैं। इनका सेवन मोटापा, ब्लड-शुगर अनियंत्रण और फैटी लिवर जैसी स्थितियों को बढ़ाता है — जो बाद में कैंसर के जोखिम को बढ़ा देते हैं।

* शुगर-फ्री ड्रिंक्स भी हमेशा सुरक्षित नहीं— अध्ययन में दिखा कि वे टाइप-2 डायबिटीज़ के जोखिम को बढ़ा सकते हैं, जो कैंसर के लिए एक जोखिम कारक है।

क्या करें? अगर प्यास बुझानी है तोः

1. नींबू पानी
2. ताज़ा जूस
3. नारियल पानी का विकल्प चुनें।
4. अल्ट्राप्रोसेस्ड स्नैक्स (चिप्स, पैकेट वाली चीजें) आज के शोध में यह पाया गया है कि इन तैयार खाद्य पदार्थों मेंः
1. रसायन,
2. संरक्षक,
3. अत्यधिक नमक,

जैसे तत्व होते हैं, जो कैंसर के जोखिम को बढ़ाते हैं।

क्या करें? ताज़ा फल-सब्ज़ियाँ खाएं

होम-मेड स्नैक्स जैसे भुने चने, मूँग फली

5. अन्य ज़रूरी जीवनशैली बदलाव
1. स्वस्थ वजन बनाए रखें
2. नियमित व्यायाम (कम से कम 30 मिनट रोज़)
3. हरी सब्ज़ियों और फल का भरपूर सेवन
4. नमक, तला-भुना, जंक फूड कम करें
5. कैंसर-इनफेक्शन से बचाव के लिए HPV और हेपेटाइटिस B वैक्सीन लेना भी प्रभावी माना जाता है

अंतिम महत्व की बात कैंसर केवल बीमारी नहीं, यह एक जीवन शैली परिणाम है। इसलिएः

1. आज की आदतें ⇒ कल की ज़िंदगी
2. अगर हम अल्कोहॉल, तम्बाकू, कोल्ड ड्रिंक और पैकेट-खाद्य पदार्थों को छोड़ दें, तो हम ना केवल कैंसर से बच सकते हैं, बल्किः जीवन की गुणवत्ता और परिवार की खुशहाली भी बनाए रख सकते हैं।

आपका लक्ष्य क्या है?

1. परिवार के लिए सुख-शांति
2. आर्थिक बोझ से मुक्त जीवन
3. स्वस्थ और लंबी ज़िंदगी

इस लक्ष्य को पाने के लिए उपर्युक्त आदतों को तुरंत बंद कर देना सबसे महत्वपूर्ण कदम है।

सर्दियों का गांव का खज़ाना — चने के पत्ते की सब्ज़ी!

पिंकी कुंडू

खेत में लहराते चने के छोटे डंठलङ्घ

स्वाद में थोड़ा खट्टा, लेकिन सेहत के लिए बहुत अच्छा!

हेल्थ बेनिफिट्स

1. डाइजेशन बेहतर करता है – फाइबर से भरपूर होने के कारण कब्ज़ में मदद करता है

2. खून की मात्रा बढ़ाने में मदद करता है – आयरन का अच्छा सोर्स

3. हड्डियों के लिए अच्छा – कैल्शियम और फास्फोरस से भरपूर

4. डायबिटीज के लिए अच्छा – बैलेंस्ड डाइट के हिस्से के तौर पर फायदेमंद

5. वज़न कंट्रोल – कैलोरी कम, न्यूट्रिशन ज़्यादा

खाने के तरीके

गीली सब्ज़ी – बेसन, लहसुन, मिर्च, मूंगफली डालें; ब्रेड के साथ स्वादिष्ट!

सूखी (संदगी) – इसे एक साल तक स्टोर करके इस्तेमाल किया जा सकता है।

ज़रूरी नोटः सर्बज़ियों को हो सके तो धोना नहीं चाहिए; धोने से नैचुरल एसिडिटी कम हो जाती है।

श्वास रोग

पिंकी कुंडू

श्वास रोग अत्यंत कष्टकारी होता है। बहुत सारे लोग इस रोग से पीड़ित हैं और कोई अच्छा उपचार चाहते हैं। ऐसे में हम एक ऐसी आयुर्वेदिक औषधि की बात कर रहे हैं, जिसके बारे में आचार्य वाग्भट ने बहुत स्ट्रॉन्ग स्टेटमेंट दिया है।

"श्वास और कास यानी पूरी रेस्पिरेटरी ट्रैक्ट की बीमारियों में बाकी सारी दवाइयाँ एक तरफ, और ये एक औषधि एक तरफ।"

अगर आपको सांस फूलने की समस्या है, सूखी या बलगम वाली खांसी रहती है, गले में खराश, बार-बार कफ जमा होना, ब्रोंकाइटिस, पुराना टीबी, निमोनिया के बाद कमजोर फेफड़े, या स्मोकिंग की वजह से सांस की दिक्कत है तो, यह औषधि आपके लिए बहुत गुणकारी है।

आचार्य वाग्भट ने अष्टांग हृदय, चिकित्सा स्थान, अध्याय 3 के श्लोक 172 में कहा है—

"सर्वेषु श्वासकासेषु केवलं विभीतकी"

अर्थात श्वास और कास की सभी बीमारियों में केवल विभीतकी (बहेड़ा) ही पर्याप्त है।

इतना बड़ी ख्याति आयुर्वेद में बहुत कम दवाओं के लिए मिलती है।

यहां जिस औषधि की बात हो रही है, वह है विभीतकी, जिसे आम भाषा में बहेड़ा कहते हैं।

लाभ

☑सांस फूलना
☑सूखी खांसी या कफ वाली खांसी
☑गले में बार-बार खराश या भारीपन
☑ब्रोंकाइटिस
☑स्मोकिंग के बाद सांस की दिक्कत
☑पुराने टीबी या निमोनिया के बाद कमजोर लंग्स
☑रात में कफ जम जाना, सुबह गला पूरी तरह भरा हुआ लगना
☑नाक से ज्यादा पानी गिरना, साइनस की समस्या

सेवन विधि

गुड़ के साथ गोली बनाकर
बहेड़ा पाउडर एक चुटकी
पुराना देसी गुड़ थोड़ा सा
दोनों मिलाकर चना दाने जितनी छोटी गोली बना लें।

दिन में 4–5 बार, खाने के बाद चूसने की तरह लें।

इसे एक बार में निगलना नहीं है, धीरे-धीरे मुंह में घुलने देना है।

क्योंकि श्वास रोग में आयुर्वेद बार-बार अल्प मात्रा में औषधि लेने को कहता है।

पाउडर + गर्म पानी

आधा चम्मच बहेड़ा पाउडर
हल्के गुनगुने पानी के साथ
खासकर रात में सोने से पहले

यह तरीका उन लोगों के लिए खास है जिनका गला रात में बंद हो जाता है और सुबह भारी कफ निकलता है।

अब आयुर्वेदिक लॉजिक समझिए

श्वास रोग की जड़ कहाँ है?

आयुर्वेद के अनुसार श्वास रोग सीधे फेफड़ों से शुरू नहीं होता।

सबसे पहले गड़बड़ी होती हैः
आमाशय (पेट) में
अग्नि (डाइजेस्टिव फायर) कमजोर होती है

रस धातु ठीक से नहीं बनती

रस धातु का मल = कफ, जो ज़्यादा बनने लगता है

यही कफ ऊपर जाकर छाती और लंग्स में जमा हो जाता है

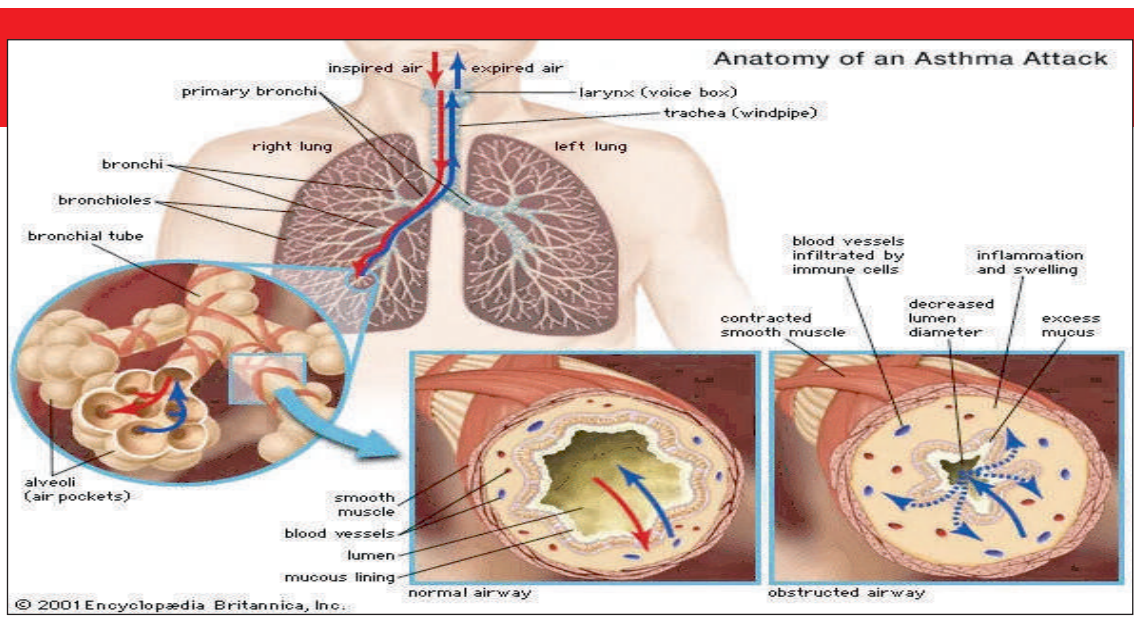

यानी अगर पेट ठीक नहीं, तो सांस भी ठीक नहीं।

बहेड़ा के आयुर्वेदिक गुण

लघु – हल्का, कफ को तोड़ने वाला
रूक्ष – अतिरिक्त चिकनाई हटाता है
उष्ण – गर्म प्रकृति, वात-कफ शमन

विपाक

मधुर विपाक – यानी पाचन के बाद शरीर को संतुलन देता है

दोषों पर प्रभाव

वात को अनुलोमन करता है
कफ को विशेष रूप से कम करता है
पित्त को संतुलित रखता है

धातुओं पर प्रभावः क्यों फेफड़ों के लिए खास है?

विभीतकी का प्रभाव इन धातुओं पर बताया गया हैः

रस धातु
रक्त धातु
मांस धातु
मेद धातु

आयुर्वेद कहता है कि फेफड़ों (फुफ्फुस) की उत्पत्ति रक्त धातु से होती है।

जब रक्त धातु शुद्ध और मजबूत होती है, तो लंग्स भी मजबूत होते हैं।

बहेड़ा

पाचन सुधारता है
रस और रक्त धातु को शुद्ध करता है
कफ का एक्सेस प्रोडक्शन रोकता है
सीधे नाक से लेकर लंग्स तक काम करता है

किन मरीजों में असर सबसे ज्यादा दिखता है?

जिनके सीने में भारी कफ भरा रहता है
जिनको पीला या सफेद गाढ़ा बलगम निकलता है
जिनकी खांसी लंबे समय से ठीक नहीं हो रही
जिनको रात में सांस लेने में ज्यादा दिक्कत होती है

ऐसे मामलों में बहेड़ा को आयुर्वेद "मोर देन हाफ ट्रीटमेंट" मानता है।

इसे श्वास रोग के लिए बहुत उत्तम माना गया है क्योंकि यह पाचन की जड़ से इलाज करती है

कफ को सिर्फ दबाती नहीं, बनने से रोकती है

लंग्स, गला, नाक—पूरी रेस्पिरेटरी ट्रैक्ट पर काम करती है

शास्त्रों में इसका स्पष्ट और स्ट्रॉन्ग उल्लेख है इसीलिए आचार्य वाग्भट ने कहा —

श्वास रोग में अगर एक औषधि चुननी हो, तो विभीतकी पर्याप्त है।

सभी सुखी और निरोगी रहे

कामदेव और उनकी अर्धांगिनी रति।

पिंकी कुंडू

भारतीय कला और अध्यात्म में प्रेम को केवल आकर्षण नहीं, अपितु सृष्टि की मूल ऊर्जा माना गया है। इसी दिव्य सत्य का सजीव रूप हैं कामदेव और उनकी अर्धांगिनी रति।

कामदेव वह शक्ति हैं जो चेतना में इच्छा का प्रथम कंपन उत्पन्न करती है। उनके पुष्पबाण हृदय को स्पर्श कर जीवों में सृजन की प्रेरणा जगाते हैं। रति उस इच्छा की मधुर भावना हैं — समर्पण, अनुराग और मिलन की आत्मिक अनुभूति।

दोनों का आलिंगन केवल दैहिक समीपता नहीं, अपितु इच्छा और भावना के अद्वैत का प्रतीक है। काठमांडू की पौभा चित्रशैली में उनका यह संयुक्त रूप प्रेम की पूर्णता को दर्शाता है — जहाँ कामना पवित्र बनती है और भावना दिव्यता को स्पर्श करती है।

शास्त्रों में कहा गया है —

कामदेवाय विद्महे पुष्पबाणाय धीमहि।
तन्नोऽनंगः प्रचोदयात॥

और प्रेम की सूक्ष्म अनुभूति के लिए —

रत्यै नमः सुरसुन्दरी,
भावभक्तिप्रदायिनी।
मनोहारिणि सर्वेषां, कामस्य हृदयेश्वरी॥

जब इच्छा और भावना संतुलित होते हैं, तब प्रेम केवल आकर्षण नहीं रहता, अपितु सृष्टि का उत्सव बन जाता है। यही काम और रति का दिव्य संदेश है — प्रेम में शक्ति है, और शक्ति में सृजन।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश: केवल भगवान के रूप नहीं, बल्कि ब्रह्मांड का सबसे बड़ा विज्ञान!

पिंकी कुंडू

हिंदू धर्म का चिंतन कितना वैज्ञानिक और गहरा है, इसका सबसे बड़ा प्रमाण है हमारे त्रिदेवों—ब्रह्मा, विष्णु और महेश की संकल्पना।

आइए समझते हैं अध्यात्म और आधुनिक विज्ञान (Science) का यह अद्भुत संगमः

सृष्टि का मूल आधारः 'तीन' की संख्या

आधुनिक विज्ञान ने जब ब्रह्मांड की सबसे छोटी इकाई (अणु/Atom) को तोड़ा, तो पाया कि पूरी सृष्टि मुख्य रूप से तीन घटकों से बनी है — इलेक्ट्रॉन (Electron), न्यूट्रॉन (Neutron), और पॉजीट्रॉन/प्रोटॉन (Positron/Proton)।

विज्ञान कहता है कि ये तीन कण क्रमशः Positive, Negative और Neutral होते हैं। यही बात हमारे ऋषियों ने हजारों साल पहले त्रिदेवों के रूप में समझा दी थी!

त्रिदेव और ब्रह्मांडीय ऊर्जा (Cosmic Energy):

ब्रह्मा (Positive / विधायक): ये सृष्टि के निर्माता हैं। विज्ञान की भाषा में यह वह 'पॉजिटिव' या सृजनात्मक ऊर्जा है जिससे इस जगत का निर्माण होता है।

विष्णु (Neutral / तटस्थ): ये पालनहार हैं। न ये निर्माण करते हैं, न विध्वंस। ये एक तटस्थ (Neutral) भाव से इस पूरी सृष्टि के संतुलन को संभालते और चलाते हैं।

महेश/शिव (Negative / निषेधक): ये संहारक हैं। यह वह ऊर्जा है जो पुरानी चीजों को विलीन (Destroy) करती है, ताकि नए का निर्माण हो सके।

शून्य (The Ultimate Void): * अगर इस जगत को हम और गहराई में तोड़ते जाएं, तो इन तीन के बाद कुछ भी नहीं बचता... बचता है तो केवल 'शून्य'। इसी शून्य को हमारे शास्त्रों में 'परम सत्य' या 'अनाम' (जिसका कोई नाम न हो) कहा गया है। उस शून्य से जो पहली इकाई प्रकट होती है, वही ब्रह्मा, विष्णु और महेश हैं।

निष्कर्षः "सभी नाम इशारे हैं, उस अनाम की ओर..." ईश्वर के ये रूप केवल कहानियां नहीं हैं, बल्कि यह मनुष्य के मन और ब्रह्मांड की सबसे गहरी मनोवैज्ञानिक और वैज्ञानिक व्याख्या है।

ऊर्जा, मन और पेट: जीवन की सफलता का मूल संतुलन

पिंकी कुंडू

मनुष्य का जीवन ऊर्जा पर आधारित है। हम जो भी करते हैं सोचते हैं, बोलते हैं, काम करते हैं, प्रेम करते हैं या सृजन करते हैं सब ऊर्जा के माध्यम से ही संभव होता है। जब ऊर्जा संतुलित और केंद्रित होती है, तब हमारा ध्यान (फोकस) मजबूत रहता है। लेकिन जैसे ही ऊर्जा बिखरती है, हमारा ध्यान भी बिखर जाता है, और परिणामस्वरूप हमारा कार्य अधूरा, असंतुलित या असफल हो सकता है।

"ऊर्जा का बिखराव और फोकस की कमी"

जब मन इधर-उधर की चिंताओं, नकारात्मक विचारों या व्यर्थ कल्पनाओं में उलझ जाता है, तो ऊर्जा का बंटवारा होने लगता है। व्यक्ति एक काम कर रहा होता है, लेकिन उसका मन कई दिशाओं में भटक रहा होता है। परिणामस्वरूप वह पूरी क्षमता से किसी भी काम में नहीं जुड़ पाता।

इसी तरह, यदि शरीर अस्वस्थ है विशेषकर पेट खराब है तो व्यक्ति की ऊर्जा का बड़ा हिस्सा उस असुविधा से जूझने में खर्च हो जाता है। पेट को आयुर्वेद में शरीर का केंद्र माना गया है। जब पाचन सही होता है, तो शरीर को सही पोषण मिलता है, और मन भी स्थिर रहता है। लेकिन जब हम अनुचित आहार लेते हैं, तो पेट खराब होता है, और उसके साथ-साथ ऊर्जा भी कमज़ोर हो जाती है।

"मन और पेट का गहरा संबंध"

मन और पेट का संबंध केवल शारीरिक नहीं, बल्कि भावनात्मक भी है। जब मन दुखी, चिंतित या क्रोधित होता है, तो उसका सीधा प्रभाव पाचन तंत्र पर पड़ता है। तनाव के कारण भूख कम लगना, गैस, एसिडिटी या अपच होना सामान्य है। उसी प्रकार, जब पेट खराब होता है, तो मन भी चिड़चिड़ा और अस्थिर हो जाता है।

इसलिए यह समझना आवश्यक है कि मन और पेट दोनों को स्वस्थ रखना, ऊर्जा को सुरक्षित रखने जैसा है। यदि मन शुद्ध और शांत है, और पेट संतुलित है, तो ऊर्जा हमारे नियंत्रण में रहती है।

"वर्तमान में डूब जाना: ऊर्जा का सही उपयोग"

जब मन चंगा होता है, तो व्यक्ति जो भी कार्य करता है, उसमें पूरी तरह डूब जाता है। यदि वह लिख रहा है, तो वह केवल लिखने में ही होता है। यदि वह प्रेम कर रहा है, तो वह उस प्रेम में पूरी तरह उपस्थित होता है। यदि वह पढ़ाई कर रहा है, तो उसका ध्यान केवल पढ़ाई में होता है।

यही "पूर्ण उपस्थिति" ऊर्जा का सर्वोत्तम उपयोग है। जब व्यक्ति किसी कार्य में पूरी तरह डूब जाता है, तो उस कार्य से नई तरंगें उत्पन्न होती हैं। ये तरंगें विचारों को गहराई देती हैं, सोच को गंभीर बनाती हैं और नए सृजन की प्रेरणा देती हैं।

व्यापार हो, अध्ययन हो, कला हो या संबंध हर क्षेत्र में सफलता का मूल मंत्र यही है कि व्यक्ति उस क्षण में पूर्ण रूप से उपस्थित हो।

"मन की शुद्धता: ऊर्जा की रक्षा"

मन को शुद्ध रखना आसान नहीं है, क्योंकि मन अत्यंत चंचल है। इंसान कई बार बिना कारण भी अपने दिमाग को नकारात्मक सोच से भर लेता है जैसे बिना सोचे-समझे कुछ भी खाकर पेट खराब कर लेता है। जिस प्रकार हम भोजन चुनते समय सावधानी बरत सकते हैं, उसी प्रकार हमें विचारों को चुनते समय भी सजग रहना चाहिए।

मन की शुद्धता के लिए कुछ आवश्यक कदम हैं:

1. स्वयं पर ध्यान देना :– प्रतिदिन कुछ समय अपने विचारों को देखने और समझने में लगाएँ।

2. सकारात्मक संगति :– जिन लोगों और विचारों के साथ आप रहते हैं, वे आपके मन को प्रभावित करते हैं।

3. संतुलित आहार और दिनचर्या :– स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन की नींव है।

4. ध्यान और एकाग्रता अभ्यास :– यह मन को स्थिर और स्पष्ट बनाता है।

5. वर्तमान में जीना :– अतीत की ग्लानि और भविष्य की चिंता ऊर्जा का सबसे बड़ा अपव्यय हैं।

ऊर्जा जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है। इसका बिखराव हमारी क्षमता को कमजोर करता है, जबकि इसका केंद्रित होना हमें असाधारण बना सकता है। मन और पेट ये दोनों ऊर्जा के मुख्य स्तंभ हैं। यदि ये संतुलित और शुद्ध हैं, तो व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में गहराई से उतर सकता है और नया सृजन कर सकता है।

मन को स्वच्छ रखें, पेट को संतुलित रखें, और हर कार्य में पूर्ण रूप से उपस्थित रहें।

जब मन चंगा है, तो ऊर्जा आपके हाथ में है, और जब ऊर्जा आपके हाथ में है, तो सफलता भी दूर नहीं।

सफल साधना का रहस्य मंत्र की संख्या में नहीं, बल्कि मन की गुणवत्ता में छिपा है

पिंकी कुंडू

साधना केवल आसन पर बैठकर किया गया जप, ध्यान या पूजन नहीं है; वह तो उसका एक छोटा भाग मात्र है।

वास्तविक साधना तब प्रारंभ होती है जब साधक अपने मन के भीतर चल रहे विचारों को देखना शुरू करता है क्योंकि मन ही वह स्थान है जहाँ संकल्प बनता है और ऊर्जा उसी दिशा में प्रवाहित होती है जहाँ मन अधिक समय तक ठहरता है।

यदि बाहर से मंत्र जप हो रहा हो,

* नियम पालन हो रहा हो,

* पर भीतर का मन धन, मान-प्रतिष्ठा, भोग या आसक्ति में उलझा हो,

* तो चेतना दो दिशाओं में बँट जाती है।

मुख से मुक्ति की बात होती है, पर मन भोग की ओर चलता है।

ब्रह्मांड की सूक्ष्म व्यवस्था शब्दों से अधिक विचारों को ही वास्तविक आदेश मानती है।

साधना में विचार बीज के समान हैं यदि उस बीज में क्रोध, ईर्ष्या, कामना या लोभ भरा हो तो उससे दिव्यता का वृक्ष नहीं उग सकता।

मंत्र अग्नि के समान है, पर यदि मन में वासनाओं का ईंधन डाला जाए तो वही अग्नि साधक को ऊपर उठाने के बजाय उन वासनाओं को और प्रबल कर देती है।

इसलिए साधना का सार यह है कि मन, वचन और कर्म एक ही दिशा में हों। जब विचार शुद्ध और ईश्वराभिमुख हो जाते हैं, तब थोड़ी सी साधना भी गहरी फलदायी हो जाती है।

सफल साधना का रहस्य मंत्र की संख्या में नहीं, बल्कि मन की गुणवत्ता में छिपा है।

पापमोचनी और कामदा एकादशी कब? नोट करें सही तारीख और मुहूर्त

मार्च 2026 में दो प्रमुख एकादशी, पापमोचनी और कामदा एकादशी, मनाई जाएंगी, जो भगवान विष्णु को समर्पित हैं। जानें इन दोनों व्रतों की सही तिथियां, पूजा का शुभ मुहूर्त, पारण का समय और इनका धार्मिक महत्व, जिससे पापों से मुक्ति और मनोकामनाओं की पूर्ति होती है।

हिंदू धर्म एकादशी तिथि का बेहद महत्व माना जाता है। एकादशी व्रत भगवान विष्णु को समर्पित है।

साल कुल में 24 एकादशी तिथियां पड़ती है और हर महीने में दो बार एकादशी तिथियां मनाई जाती हैं, पहली कृष्ण पक्ष में और दूसरी शुक्ल पक्ष में। ऐसे ही मार्च 2026 में दो प्रमुख एकादशी तिथियां पडेंगी जिसमें पहली पापमोचनी एकादशी और दूसरी कामदा एकादशी होगी। धार्मिक मान्यता के अनुसार, एकादशी का व्रत करने से भगवान विष्णु का आशीर्वाद बना रहता है और माता लक्ष्मी की कृपा दृष्टि भी बनीं रहती है। इस दिन विधिवत रुप पूजा की जाती है और व्रत रखा जाता है। आइए आपको बताते हैं मार्च के महीने में कब-कब हैं एकादशी तिथियां।

त्वचा के सफेद दाग के लिए सम्पूर्ण हर्बल देखभाल

पापमोचनी एकाद्वशी तिथि और शुभ मुहूर्त

- मार्च महीने की पहली एकादशी चैत्र महीने के कृष्ण पक्ष की पापमोचनी एकादशी है।

- पापमोचनी एकादशी तिथि आरंभ-14 मार्च 2026, प्रातः 08 बजकर 10 मिनट पर

- पापमोचनी एकादशी तिथि समापन-15 मार्च 2026, प्रातः 9 बजकर 16 मिनट तक

- उदया तिथि के अनुसार, पापमोचनी एकादशी का व्रत 15 मार्च 2026 को रखना फलदायी होगा।

- व्रत का पारण-16 मार्च 2026, प्रातः 06 बजकर 30 मिनट से 08 बजकर 54 मिनट के बीच करना शुभ होगा।

पापमोचनी एकादशी पूजा विधि

- पापमोचनी एकादशी के दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नान करके और सूर्य देव को अर्घ्य अर्पित कर सकते हैं। हाथ में जल या गंगाजल लेकर विधिपूर्वक व्रत का संकल्प लें।

- इसके बाद पूजा का स्थान साफ करके अच्छे से सफाई करें और एक चौकी पर पीला कपड़ा बिछाएं। अब चौकी पर भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की मूर्ति या चित्र स्थापित करें।

- अब भगवान को केसर या हल्दी से तिलक लगाएं तथा पीले वस्त्र, पीले पुष्प और तुलसी दल अर्पित करें।

- इस बात का ध्यान रखें कि एकादशी के दिन तुलसी न तोड़ें, लेकिन विष्णु जी को तुलसी के बिना भोग स्वीकार्य नहीं होता है इसलिए आपको तुलसी एक दिन पहले ही तोड़कर रखनी चाहिए।

-इसके बाद घी का दीपक और धूप प्रज्वलित कर पापमोचनी एकादशी व्रत कथा का श्रद्धापूर्वक पाठ करें।

- आखिर में भगवान विष्णु जी की आरती करें और उन्हें फल व मिठाई का भोग अर्पित करें।

- इस दिन गरीबों को भोजन कराना या अन्न-दान करना विशेष पुण्यदायी माना गया है।

मनुष्य का जीवन केवल दिखाई देने वाली गतिविधियों तक सीमित नहीं है....

मनुष्य का जीवन केवल दिखाई देने वाली गतिविधियों तक सीमित नहीं है। उसके भीतर एक विशाल आंतरिक प्रदेश है परतों पर परतें, आदतों की, प्रतिक्रियाओं की, स्मृतियों की, इच्छाओं की। साधना का मार्ग इन्हीं परतों को पहचानने और धीरे-धीरे पार करने का मार्ग है।

हम सामान्यतः बाहर की दुनिया में इतने उलझे रहते हैं कि अपनी ऊर्जा का बड़ा हिस्सा बाहरी घटनाओं, लोगों और इच्छाओं में बिखेर देते हैं। हर प्रतिक्रिया, हर असंतोष, हर लालसा हमारी जीवनी-शक्ति का थोड़ा-थोड़ा अंश ले लेती है। साधक का पहला कदम यही है कि वह इस बिखराव को देखना शुरू करे। वह समझे कि थकान केवल शरीर की नहीं होती, भीतर भी एक निरंतर क्षय चलता रहता है।

ऊर्जा का लौटना भीतर की ओर

जब व्यक्ति बाहरी आकर्षणों से धीरे-धीरे दूरी बनाता है, तब उसकी दृष्टि भीतर की ओर मुड़ने लगती है। यह पलायन नहीं है; यह केंद्र की खोज है। बाहर की वस्तुएँ तब भी रहती हैं, पर वे अब ऊर्जा का मुख्य स्रोत या उपभोक्ता नहीं बनतीं।

ऐसे में एक अद्भुत परिवर्तन होता है जो शक्ति पहले इधर-उधर बिखर जाती थी, वही अब भीतर संचित होने लगती है। यह संचित शक्ति शांति भी ला सकती है और उथल-पुथल भी। जैसे बंद कमरे में दीपक की लौ अचानक प्रज्वलित हो जाए, वैसे ही भीतर एक तीव्रता जन्म लेती है। इसे कई परंपराओं में 'तप' कहा गया है एक ऐसा आंतरिक ताप जो शुद्ध करता है, पर साथ ही परीक्षा भी लेता है।

इस आंतरिक ताप की चुनौती

भीतर जागी हुई शक्ति को संभालना आसान नहीं होता। यदि व्यक्ति के विचार अस्थिर हों, वाणी असंयमित हो और कर्म अव्यवस्थित हों, तो यह शक्ति उसे संतुलन से हटा सकती है।

इसीलिए साधना में अनुशासन पर इतना बल दिया गया है। मन की स्पष्टता, वचन की सच्चाई और आचरण की पवित्रता ये तीनों मिलकर पात्रता बनाते हैं। बिना इस आधार के, बढ़ी हुई ऊर्जा भ्रम, अहंकार या मानसिक असंतुलन का कारण बन सकती है।

जिस प्रकार तेज विद्युत प्रवाह को संभालने के लिए उपयुक्त तार और संयंत्र चाहिए, वैसे ही तीव्र आंतरिक जागरण के लिए मजबूत अंतःसंरचना चाहिए।

व्यापक सत्ता से स्पर्श

जब व्यक्ति अपनी सीमित पहचान से ऊपर उठने लगता है, तब उसे अनुभव होता है कि वह अकेला, अलग-थलग अस्तित्व नहीं है। उसके भीतर जो चेतना है, वही व्यापक स्तर पर भी प्रवाहित है।

यह कोई कल्पना नहीं, बल्कि अनुभूति का विस्तार है। जैसे नदी सागर से मिलकर अपना अलग नाम खो देती है, वैसे ही साधक को अनुभव होता है कि उसकी व्यक्तिगत सत्ता किसी बड़ी धारा का अंश है। इस मिलन में आनंद है, पर साथ ही अत्यधिक तीव्रता भी है।

इस अवस्था में स्थिर रहना सबसे बड़ी परीक्षा है।

साधना का वास्तविक सार

इन सभी चर्चाओं के केंद्र में एक मूल बात है स्वयं को जानना। साधना का उद्देश्य किसी रहस्यमय शक्ति का प्रदर्शन नहीं, बल्कि बिखरी हुई ऊर्जा को समेटकर एकाग्र बनाना है।

जब व्यक्ति भीतर स्थिर हो जाता है, तब उसे बाहरी सहारों की आवश्यकता कम होती जाती है। अंततः वह स्थिति आती है जहाँ ऊर्जा सहज रूप से प्रवाहित होती है, बिना उथल-पुथल के, बिना विशेष साधनों के।

यही परिपक्वता है जहाँ साधक बाहरी वस्तुओं पर निर्भर नहीं रहता, बल्कि स्वयं अपने भीतर संतुलन का स्रोत बन जाता है।

इस मार्ग में आकर्षण भी है और जोखिम भी। इसलिए आवश्यक है विवेक, धैर्य और सतत आत्मनिरीक्षण। शक्ति तभी कल्याणकारी बनती है जब उसे संभालने की क्षमता विकसित हो चुकी हो। वरना वही शक्ति, जो मुक्ति का साधन है, बंधन का कारण भी बन सकती है।

पात्र नागरिकों को निर्धारित समय अवधि में मिले दयालु-द्वितीय योजना का लाभ : डीसी

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने अधिकारियों की जिला स्तरीय बैठक में की दीन दयाल उपाध्याय अंत्योदय परिवार सुरक्षा योजना के तहत दयालु द्वितीय योजना की समीक्षा

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 06 मार्च। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने लघु सचिवालय स्थित सभागार में शुक्रवार को जिला स्तरीय बैठक में अधिकारियों के साथ दीन दयाल उपाध्याय अंत्योदय परिवार सुरक्षा योजना के तहत दयालु-द्वितीय योजना की विस्तार से समीक्षा की। इस बीच जिला

सांख्यिकी अधिकारी युद्धवीर सिंह ने योजना की विस्तार से जानकारी सांझा की और बताया कि अब तक योजना के अंतर्गत 11 आवेदन प्राप्त हुए हैं।

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि यह योजना हरियाणा के निवासियों के लिए है। इस योजना के तहत लावारिस-आवारा/जंगली पशुओं जैसे गाय, बैल, कुत्ते, नीलगाय, भैंस आदि के काटने-चोट मारने से हुई आकस्मिक मृत्यु/ घायल होने/ दिव्यांगता की स्थिति में वित्तीय सहायता प्रदान करना है। इस योजना का उद्देश्य परिवार पहचान पत्र (पीपीपी) के तहत पंजीकृत सभी परिवारों को कवर करना है।

डीसी ने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा अनेक प्रकार की कल्याणकारी योजनाएं क्रियान्वित की जा रही हैं, जिसमें दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय परिवार सुरक्षा योजना के तहत दयालु-द्वितीय योजना शुरू की है। इसमें आवारा पशुओं/पशुओं के कारण हुई दुर्घटना/घटना के संबंध में किए गए दावे के लिए भुगतान किए जाने वाले मुआवजे का निर्धारण जिला स्तरीय कमेटी द्वारा किया जाएगा। योजना का उद्देश्य पीड़ति को सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा प्रदान करना है। परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु या नॉर्म अनुसार प्रतिशत दिव्यांगता होने पर एक से पांच लाख रुपये तक की आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। आवेदन ऑनलाइन किया जा सकता है। आवेदक परिवार के पास परिवार पहचान पत्र होना चाहिए। आवेदक परिवार हरियाणा का मूल निवासी होना चाहिए। एफआईआर की कॉपी की जरूरी है।

- इस प्रकार मिलता है पीड़ित लोगों को दयालु-द्वितीय योजना का लाभ

जिला सांख्यिकी अधिकारी युद्धवीर सिंह ने बताया कि 12 वर्ष तक आयु के बच्चों के लिए एक लाख रुपए, 12 से 18 वर्ष के लिए दो लाख रुपए, 18-25 वर्ष के लिए तीन लाख, 25 से 45 वर्ष आयु तक के लिए पांच लाख रुपए, 45 वर्ष से अधिक आयु वाले के लिए तीन लाख रुपए आर्थिक सहायता देने का प्रावधान किया गया है। लाभार्थी/दावेदार को दुर्घटना के 90 दिनों के भीतर सहायता हेतु योजना के ऑनलाइन पोर्टल https://dapsy.finhry.gov.in के माध्यम से आवेदन करना जरूरी है।सभी आवश्यक दस्तावेजों में परिवार पहचान पत्र, एफआईआर/डीडीआर, मृत्यु प्रमाण पत्र और अस्पताल डिस्चार्ज प्रमाणपत्र जरूरी है।

बैठक में यह अधिकारी रहे मौजूद

इस अवसर पर एसडीएम झज्जर अंकित कुमार चौकसे आईएएस, डीएफओ साहिती रेडडी,एसडीएम बेरी रेणुका नांदल,एसडीएम बादली डॉ रमन गुप्ता,एसीपी दिनेश कुमार,डीडीपीओ निशा तंवर सहित स्वास्थ्य, सेवा सहित संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

समाधान शिविर की शिकायतों का समयबद्ध निपटान जरूरी : डीसी

समाधान शिविर की साप्ताहिक समीक्षा बैठक में डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने दिए निर्देश

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर,06 मार्च। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि आमजन से जुड़ी प्रत्येक समस्या का समयबद्ध निपटान करना प्रशासन की पहली प्राथमिकता है। ऐसे में अधिकारी जनसमस्याओं का तत्परता से निपटारा करें। डीसी शुक्रवार को समाधान शिविर की साप्ताहिक समीक्षा बैठक में अधिकारियों को जरूरी निर्देश दे रहे थे। डीसी ने बताया कि जिला में आयोजित हो रहे समाधान शिविरों में अभी तक कुल 5673 शिकायत प्राप्त हुई हैं इनमें से केवल 141 पेंडिंग हैं। पेंडिंग शिकायतों का निवारण प्राथमिकता के आधार पर किया जा रहा है।

उन्होंने अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए कि वे समाधान शिविर, सीएम विंडो, जनसंवाद आदि माध्यमों से प्राप्त सभी शिकायतों की रिपोर्ट निर्धारित समय सीमा में पोर्टल पर अपलोड करना सुनिश्चित करें। उन्होंने जनस्वास्थ्य, पुलिस, सिंचाई, पंचायत, राजस्व, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, एचएसवीपी, पीडब्ल्यूडी तथा शिक्षा विभाग से जुड़ी समस्याओं का विभागवार आकलन करते हुए स्पष्ट निर्देश दिए कि सभी विभाग समस्याओं का शीघ्र समाधान सुनिश्चित करें तथा समय पर पोर्टल पर एटीआर अपलोड करें।

इन विभागों के अधिकारी रहे मौजूद

इस अवसर पर एडीसी जगनिवास, डीएफओ साहिती रेड्डी,एसडीएम झज्जर अंकित कुमार चौकसे, एसडीएम बेरी रेणुका नांदल, एसडीएम बादली डॉ रमन गुप्ता,सीटीएम नमिता कुमारी, एसीपी दिनेश कुमार, डीडीपीओ निशा तंवर, जनस्वास्थ्य विभाग के एक्सईएन अश्वनी सांगवान सहित विभागीय अधिकारी मौजूद रहे।

डिजिटल मोड में होने वाली जनगणना के लिए डीसी ने अधिकारियों को दिए जरूरी निर्देश

लघु सचिवालय में जनगणना कार्य को लेकर चार्ज आफिसर्स की वर्कशॉप आयोजित

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 6 मार्च। आगामी जनगणना-2027 को डिजिटल मोड में सफलतापूर्वक संपन्न कराने के उद्देश्य से शुक्रवार को लघु सचिवालय में तहसीलदारों व शहरी निकायों के अधिकारियों की कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने अधिकारियों को जनगणना से संबंधित आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

इस बीच जनगणना निदेशालय हरियाणा के संयुक्त निदेशक लक्ष्मण सिंह और डिविजनल इंचार्ज जसवीर सिंह ने पीपीटी के जरिये जनगणना कार्य से जुड़ी जानकारी दी।

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि जनगणना देश की सबसे महत्वपूर्ण प्रशासनिक प्रक्रिया है, जिसके आधार पर विकास योजनाओं का निर्माण और संसाधनों का उचित वितरण सुनिश्चित किया जाता है। इस बार जनगणना डिजिटल माध्यम से की जाएगी, इसलिए सभी अधिकारियों को तकनीकी पहलुओं की जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है।

उन्होंने कहा कि तहसीलदार व नगर निकायों के अधिकारी अपने-अपने क्षेत्र में जनगणना कार्य से जुड़े कर्मचारियों को समय रहते प्रशिक्षित करें और यह सुनिश्चित करें कि प्रत्येक अधिकारी व कर्मचारी डिजिटल एप्लिकेशन तथा निर्धारित प्रक्रिया से भली-भांति परिचित हो। उन्होंने निर्देश दिए कि जनगणना से संबंधित सभी तैयारियां निर्धारित समय सीमा में पूरी की जाएं, ताकि आगामी प्रक्रिया सुचारू रूप से संचालित की जा सके।

डीसी ने कहा कि जनगणना कार्य में सटीकता और पारदर्शिता बनाए रखना अत्यंत जरूरी है। इसके लिए अधिकारियों को क्षेत्र स्तर पर निरंतर निगरानी रखनी होगी और किसी भी प्रकार की त्रुटि की संभावना को समाप्त करना होगा। उन्होंने कहा कि 19 से 21 मार्च तक जिला स्तर पर फील्ड ट्रेनर्स की वर्कशॉप आयोजित की जाएगी जिसमें मास्टर ट्रेनर द्वारा प्रशिक्षण दिया जाएगा,जबकि 24 मार्च को चार्ज आफिसर की वर्कशॉप आयोजित की जाएगी।

कार्यशाला के दौरान पीपीटी के माध्यम से अधिकारियों को जनगणना-2027 की प्रक्रिया, डिजिटल डाटा संकलन प्रणाली, प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा अन्य प्रशासनिक व्यवस्थाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई।

इस अवसर पर सीटीएम नमिता कुमारी,तहसीलदार झज्जर शेखर सहित,सभी सेन्सस कलर्क, जिला प्रशासन के संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

सहकारिता विभाग से जुड़ी योजनाओं का लाभ उठाएं किसान : बिरेंद्र

गांव कुलासी में आयोजित किसान प्रशिक्षण शिविर में किसानों ने लिया फसल अवशेष न जलाने का संकल्प

बहादुरगढ़,06 मार्च। निकटवर्ती गांव कुलासी में हरको फैड, पंचकुला के तत्वावधान में शुक्रवार को किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि सहायक रजिस्ट्रार बिरेंद्र सिंह ने कहा कि सीएम पैक्स का गठन करके युवा पीढ़ी द्वारा स्वयं के रोजग़ार को उत्पन्न किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के कुशल नेतृत्व व सहकारिता मंत्री डा अरविन्द शर्मा के मार्गदर्शन में चल रही सहकारिता से जुड़ी योजनाओं के प्रति किसानों को जागरूक करना है। उन्होंने सी एम पैक्स के अतिरिक्त अन्य समितियों के गठन व उनकी कार्यप्रणाली व उपयोगिता पर प्रकाश डाला। उन्होंने किसानों से फसल चक्र, प्राकृतिक खेती व फसल अवशेष न जलाने का अनुरोध किया। किसानों को भविष्य में गेहूं कटाई के उपरांत फांस न जलाने की शपथ दिलवाई।

इस बीच पैक्स प्रतिनिधि चांद सिंह ने उपस्थित किसानों का स्वागत करते हुए मोबाइल बैंकिंग के उपयोग में रखने वाली सावधानियों से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि बहादुरगढ़ एम पैक्स के सीएससी सैंटर पर सभी सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं, जिनका किसान व आमजन लाभ उठा सकते हैं। उन्होंने नागरिकों से पैक्स ऋणों की समय पर वसूली देकर ब्याज माफी सुविधा का लाभ उठाने का अनुरोध किया।

हरको फैड के शिक्षा अनुदेशक एस एन कौशिक ने बताया कि हरको फैड, सहकारिता विभाग में कार्यरत सभी सहकारी संस्थाओं की कार्य योजनाओं व गतिविधियों को जन जन तक पहुंचाने के लिए प्रचार प्रसार का कार्य करती है। उन्होंने विभिन्न सहकारी समितियों के योगदान पर प्रकाश डाला, खासतौर पर सी एम पैक्स गठन करने, जैविक खेती अपनाने, कृषि व पशुपालन विभाग की नवीनतम जानकारी प्रदान करना ही मुख्य उद्देश्य है।

इस अवसर पर जिला भाजपा किसान मोर्चा अध्यक्ष राम अहलावत, रमेश कुमार, चेयरमैन पैक्स प्रबन्धक कमेटी सहित, पैक्स कर्मचारी व किसान उपस्थित थे।

परीक्षा के दौरान किसी प्रकार का ना हो बाह्य हस्तक्षेप, यही प्रशासन की प्राथमिकता : एसडीएम

एसडीएम रेणुका नांदल ने गांव जहाजगढ़ स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में परीक्षा केंद्र का किया औचक निरीक्षण

बेरी (झज्जर), 06 मार्च। उपमंडल के चिन्हित स्कूलों में चल रही हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड की परीक्षाओं के नकल रहित संचालन के लिए उपमंडल प्रशासन डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल के निर्देशन में मुस्तैदी से कार्य कर रहा है। बोर्ड परीक्षाओं के सुचारू रूप से संचालन को लेकर एसडीएम रेणुका नांदल ने शुक्रवार को राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जहाजगढ़ में चल रही परीक्षाओ के दौरान परीक्षा केंद्र का औचक निरीक्षण किया।

एसडीएम रेणुका नांदल ने शिक्षा विभाग के अधिकारियों को कड़े निर्देश देते हुए कहा कि नकल रहित परीक्षा संचालन के लिए जीरो टॉलरेंस पर काम करें। उन्होंने कहा है कि उपमंडल के विभिन्न स्कूलों में हरियाणा शिक्षा बोर्ड भिवानी द्वारा आयोजित परीक्षाओं में नकल पर पूर्ण रोक लगाई गई है। अगर कोई नकल में शामिल मिलता है तो उसके खिलाफ एफआईआर दर्ज करवाकर सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि परीक्षा केंद्रों पर कोई भी अवांछित गतिविधि नहीं होने दी जाएगी। नकल रहित परीक्षा का संचालन कराना प्रशासन का दायित्व है। उन्होंने कहा कि परीक्षा केंद्र पर नियुक्त सभी अधिकारी और कर्मचारी ईमानदारी और सत्यनिष्ठा से कार्य करें। साथ ही नकल करने, कराने और मदद करने वालों को बक्शा नहीं जाएगा। उन्होंने सभी परीक्षार्थियों व अभिभावकों से अपील करते हुए कहा कि परीक्षा के दौरान नकल रोकने में सहयोग करें। उन्होंने कहा कि परीक्षा के दौरान किसी भी तरह की अनियमितता को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

उन्होंने परीक्षा केंद्रों पर तैनात पुलिसकर्मियों को सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध करने के सख्त निर्देश देते हुए कहा कि कोई भी व्यक्ति अनाधिकृत रूप से परीक्षा केंद्र में घुसने का प्रयास करे तो उसे तुरंत राउंडअप करें। साथ ही आस-पास के क्षेत्र में झुंड बनाकर खड़े होने वाले लोगों के खिलाफ भी कानूनी कार्रवाई करें।

इन्दौर की रंग पंचमी में राजा हो या रंक सभी एकजुटता के रंग में रंगे नजर आते हैं

स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

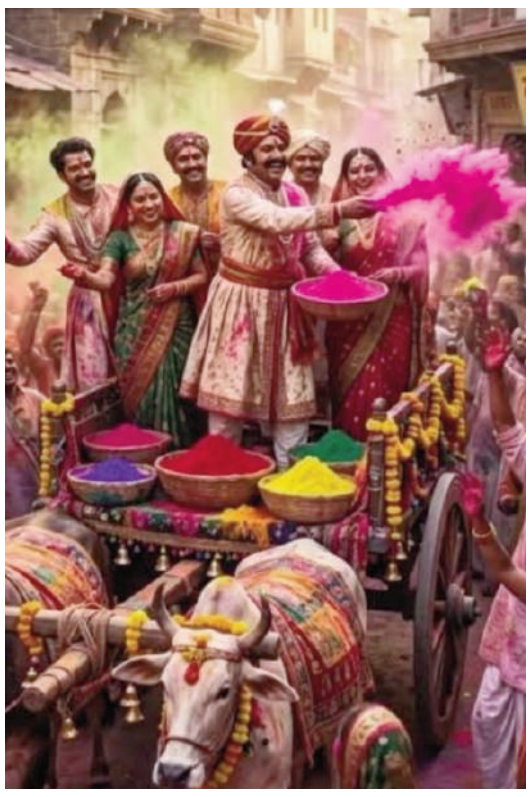

इंदौर मध्यप्रदेश में रंग पंचमी की वर्षों पुरानी होलकरकालीन परंपरा है, जो विश्व प्रसिद्ध है। यह उत्सव भाईचारा, उमंगता और रंगों के माध्यम से नफरत मिटाने का संदेश भी देता है। होली के बाद पंचमी तिथि पर रंगों भरा आसमान शहर के हृदय स्थल राजवाड़ा से निकलने वाली परंपरागत 'गेर' में रंग-गुलाल से सराबोर शहर का अनूठा नज़ारा देखने को मिलता है ।ऐसा लगता है कि , देवी देवता स्वयं आसमान से रंग बरसा रहे हो । इन्दौर की यह रंग पंचमी अब सांस्कृतिक धरोहर बन चुकी है। इंदौर शहर की रंग पंचमी की अपनी एक अलग पहचान है।

और ऐतिहासिक परंपरा भी है, इस परंपरा की शुरुआत लगभग 300 साल पहले होलकर राजवंश द्वारा आम जनता के साथ मिलकर होली खेलने और भेदभाव मिटाने के लिए की गई थी। जहां आज भी उसी तरह मिलजुलकर रंग पंचमी मनाई जाती है। इन्दौर में रंग पंचमी के दिन राजा हो या रंक सभी एकजुटता के रंग में रंगे हुए नजर आते हैं।

'गेर' का महत्वः भी यही है यहां कोई पराया नहीं सब अपने है। रंगपंचमी पर निकलने वाली 'गेर' का मतलब है 'अपनेपन' वह रिश्तों की कड़वाहट मिटाने हेतु मिलजुलकर सौहार्द समन्वय और भाईचारे को बढ़ावा मिले, यही इसका पहला उद्देश्य भी है । यहां इसी लिए भाईचारा कायम है और प्रेम व मैत्रीपूर्ण संबंध होलकर वंश के समय से चल रहा है । पुराने समय की ऐतिहासिक परंपरा के अनुसार लोग बैलगाड़ियों में रंग-गुलाल लेकर निकलते थे। उसके बाद टोरी कार्नर चौराहे पर बड़े बड़े कडाव रखे जाते थे, और लोग उसमें डुबकी लगाते थे। आज ट्रेक्टर ट्राली बड़े बड़े वाहनों में रंग गुलाल उड़ानें के लिए कम्पेसर मशीनों व हवा भरने वाले पंपों द्वारा दूर ऊंचाई तक रंग गुलाल उड़ाते हैं। तब भी इस पर्व का उत्साह उमंगता इतनी ही थी। जो आज भी इस आधुनिक दौर में भी पूरे देश को सनातन धर्म की परम्परा और

सांस्कृतिक संदेश भी दें रही है, इन्दौर की रंग पंचमी पर निकलने वाली 'गेर'। इस त्योहार को प्यार और शांति का संदेशवाहक भी बताया गया है, जो नफरत को भुलाकर रंगों के जरिए एकता को बढ़ावा देता है।

होलकर शासकों की भूमिकाः में तब कहा जाता है कि श्रीमंत यशवंत राव होलकर द्वितीय के समय से ही इस उत्सव का विशेष रूप से विस्तार हुआ ।

इंदौर की यह रंगपंचमी सिर्फ एक रंग खेलने का त्योहार नहीं, बल्कि सांस्कृतिक धरोहर की एक अनूठी मिशाल है। हम सब शहरवासियों की जिम्मेदारी है इस रंगारंग त्यौहार को उसी तरह शांति और सौहार्दपूर्ण वातावरण में से मनाएं और देश दुनिया से नफ़रत की बीज को खत्म करें। प्रेम सबसे बड़ा होता है। जो मानवीय सरोकार का एक अहम भाव है। रंग कोई भी हो उसका अपना फर्ज उसकी अपनी भावनात्मक दृष्टि है, जो आदमी को आत्मीय भाव प्रदान करती है। इसलिए इन्दौर की रंग पंचमी और इस दिन निकलने वाली परम्परागत गेर सबसे अलग है। तभी तो देश-विदेश से लोग इसे देखने और रंगों के इस सरोवर में डुबने आ ही जाते हैं। पिछले कुछ सालों से इसमें धार्मिकता का अटूट संगम देखा जानें लगा है, जब से हिन्दू के दिलों में बसे जन-जन के प्यारे नेता व मध्यप्रदेश के पूर्व शिक्षा मंत्री स्व श्री लक्ष्मण सिंह गौड़ ने इस गेर में राधाकृष्ण की फाग यात्रा जिसमें मातृशक्ति बड़ी संख्या में उपस्थित होती है। पूरे मार्ग पर भक्ति भाव से भगवान लक्ष्मीनारायण व राधे राधे कृष्णा कृष्णा का गुणगान करते नाचते गाते गुलाल व फूलों के साथ रंग पंचमी खेलते हुए नजर आते हैं। इस आयोजन में भगवान की मनोहारी झांकी व गोपाल कृष्ण और राधारानी सरकार की पालकी व रथ भी शामिल होता है। जो इसे समाजिक व धार्मिकता के साथ साथ भारतीय संस्कृति से भी जोड़े हुए रखती है।

आज मालवा स्कूल गिद्दरबाहा के प्रिंसिपल ने मेरी पुस्तक लोकार्पण की डॉ. विजय गर्ग द्वारा "हाइब्रिड टीचर: व्यक्तिगत और ऑनलाइन शिक्षण के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना

परिवहन विशेष न्यूज

आज मालवा स्कूल गिद्दरबाहा के प्रिंसिपल ने मेरी पुस्तक लोकार्पण की डॉ. विजय गर्ग द्वारा ₹हाइब्रिड टीचरः व्यक्तिगत और ऑनलाइन शिक्षण के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना। डॉ. विजय गर्ग उस पुस्तक को बताते हैं शिक्षकों को पारंपरिक ईंट-और-मोर्टार कक्षाओं और दूरस्थ/ऑनलाइन शिक्षण वातावरण (जैसे हाइब्रिड स्कूल, आपातकालीन प्रतिक्रिया, और उन छात्रों से जुड़ना जो व्यक्तिगत रूप से उपस्थित नहीं हो सकते हैं) दोनों में प्रौद्योगिकी का प्रभावी ढंग से उपयोग करने की आवश्यकता है। इसमें इस बात पर जोर दिया गया है कि प्रभावी संकर शिक्षकों को अनुदेशात्मक रणनीतियों, प्रौद्योगिकियों, उपकरणों और संसाधनों का व्यापक ज्ञान होना चाहिए, साथ ही वे छात्रों के साथ व्यक्तिगत रूप से तथा स्क्रीन के माध्यम से सार्थक संबंध भी बनाते हैं।

लेखक की प्रेरणा इस नए शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षकों और छात्रों को आगे बढ़ने में मदद करना है।

मां सीता रसोई के द्वारा रंगोत्सव होली मिलन 08 मार्च को

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन ।परिक्रमा मार्ग/ज्ञान गुदड़ी स्थित श्रीपंच हरिव्यासी महानिर्वाणी निर्मोही अखाड़ा (छत्तीसगढ़ कुंज) में तुलसीपीठाधीश्वर श्रीमज्जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी श्रीरामभद्राचार्य महाराज की सद्प्रेरणा से रंग पंचमी के शुभ अवसर पर दिव्य व भव्य 'रंगोत्सव होली मिलन' बड़े ही हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ सायं 08 मार्च 2026 को सायं 05 बजे से आयोजित किया गया है।

जानकारी देते हुए प्रख्यात साहित्यकार ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि मां सीता रसोई के द्वारा आयोजित होने वाले इस महोत्सव में प्रख्यात भजन गायक बाबा चित्र-विचित्र महाराज अपनी सुमधुर वाणी के द्वारा होली के भजनों की अमृत वर्षा कराएंगे ।जिन पर समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं द्वारा ठाकुर श्रीमथुरामल्ल महाराज के संग दिव्य पुष्प वर्षा कर होली खेली जाएगी।

इसके अलावा 8 मार्च को 'अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस' के अवसर पर ₹सनातन नारी शक्ति सम्मान समारोह₹ आयोजित होगा ।जिसके अंतर्गत सनातन धर्म और आध्यात्म को निरंतर आगे बढ़ा रही 20 सनातनी महिलाओं को सम्मानित किया जाएगा।

डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया कि महामंडलेश्वर महंत गोपीकृष्ण दास महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित इस महोत्सव की मुख्य आयोजिका मां सीता रसोई की संस्थापक, प्रख्यात समाजसेवी ₹पंजाब रत्न₹ श्रीमती मनप्रीत कौर (लुधियाना) एवं आयोजक आचार्य रामचंद्र दास महाराज (उत्तराधिकारी- श्रीतुलसी पीठ, चित्रकूट) हैं।

कार्यक्रम के व्यवस्थापक व प्रख्यात सनातन सेवी अंशुल पाराशर एवं सनातन पथ के संस्थापक गौरव शर्मा ने सभी से इस महोत्सव में उपस्थित होने का निवेदन किया है।

सिन्धी जनरल पंचायत ने लगातार 15 दिन चलने वाले सिंधी उत्सव की तैयारी शुरू कर दी है...

परिवहन विशेष न्यूज

सिन्धी जनरल पंचायत ने लगातार 15 दिन चलने वाले सिंधी उत्सव की तैयारी शुरू कर दी है। बहादुर पुरा स्थित स्वामी लीलाशाह धर्मशाला में आयोजित बैठक में सिंधी उत्सव धूमधाम से मनाने का निर्णय लेकर सभी कार्यक्रमों की घोषणा की गई।

मीडिया प्रभारी किशोर इसरानी ने बताया कि चेटीचंड का पर्व सिंधी समुदाय का एक प्रमुख त्योहार है। सिंधी समाज के लोग चेटीचंड के मौके पर अपने आराध्य देवता भगवान झूलेलाल का जन्मोत्सव बड़े ही उत्साह और धूमधाम के साथ मनाते हैं। धार्मिक मान्यता के अनुसार, भगवान झूलेलाल जल के देवता वरुण देव हैं। इस मौके पर सिंधी समाज के लोग जीवन में सुख-समृद्धि, वैभव और संपन्नता की कामना के लिए वरुण देवता की पूजा करते हैं। सिंधी उत्सव के अंतर्गत संकीर्तन यात्रा, सत्संग, संगोष्ठी, रक्तदान तथा शोभायात्रा के कार्यक्रम लगातार एक पखवाड़े शहर के विभिन्न क्षेत्रों में चलते रहेंगे।

सिंधी उत्सव के मुख्य संयोजक रामचंद्र खत्री ने बताया कि सिंधी उत्सव की शुरुआत 10 मार्च को बहादुर पुरा स्थित स्वामी लीलाशाह धर्मशाला में सायं 4 बजे होली मिलन से होगी तथा 13 मार्च को स्वामी लीलाशाह जयंती मनाई जायेगी, इस उपलक्ष में नगर संकीर्तन यात्रा और सिंधी धर्मशाला पर सत्संग होगा।

उन्होंने बताया कि 17 मार्च को कृष्णा आर्चिड में भगवान झूलेलाल की जयंती मनाई जाएगी। वरूणदेव झूलेलाल की ज्योत प्रज्वलन के साथ चेटीचंड का आगाज होगा, वहीं कार्यक्रम उपरांत सिंधी युवाओं द्वारा सिंधी संत की स्मृति में रक्तदान किया जायेगा।

18 मार्च 2026 बुधवार को सायं 5 बजे से डेम्पीयर नगर स्थित गोदड़ी वाला धाम में भारतीय सिंधु सभा महिला मंडल द्वारा झूलेलाल महोत्सव कार्यक्रम रखा गया है। वहीं मुख्य आयोजन चेटीचंड पर्व 20 मार्च शुक्रवार को भगवान झूलेलाल का जन्मोत्सव शहर में धूमधाम के साथ मनाया जाएगा, सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे तथा भव्य शोभायात्रा नगर में निकाली जाएगी।

सिंधी जनरल पंचायत के अध्यक्ष नारायण दास लखवानी ने सजातीय लोगों से अपील करते हुए कहा कि सिंधी कार्यक्रमों में बढ़चढ़ कर हिस्सा लें और एकता का परिचय दें।

बैठक में शामिल सिंधी जनरल पंचायत के अध्यक्ष नारायणदास लखवानी, मुख्य संयोजक रामचंद्र खत्री, महामंत्री बसंतलाल मंगलानी, तुलसीदास गंगवानी, जीवतराम चन्दानी, डा. प्रदीप उकरानी, कन्हैयालाल भाईजी, गुरुमुखदास गंगवानी, सुरेशचन्द मेठवानी, भगवान दास मंगवानी बेबूभाई, रमेश नाथानी, जितेन्द्र भाटिया, पीताम्बरदास रोहेरा, जितेन्द्र लालवानी, झामनदास नाथानी, चन्दनलाल आडवानी, किशोर इसरानी, विकास खत्री,सुदामालाल खत्री, सुन्दरलाल खत्री, हरीश चावला, अशोक अंदानी, गिरधारीलाल नायानी, महेश घावरी, दौलतराम खत्री कन्हैयालाल खत्री एडवोकेट, सुरेश मनसुखानी, विष्णु हेमानी, अनिल मंगलानी, मिर्चुमल कोतकवानी, तरुण लखवानी, लक्ष्मणदास वाधवानी, अशोक डाबरा, अमित आसवानी, राजेश कुमार खत्री, वासुदेव खत्री, विशनदास दुपट्टे वाले आदि ने सभी विषयों पर चर्चा की।

55वें राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह पर संजौली टैंक में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

परिवहन विशेष न्यूज

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) 55वें राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह के अवसर पर एसजेपीएनएल और सुएज़ की टीमों द्वारा एसजेपीएनएल के संजौली टैंक परिसर में उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यस्थलों, विशेष रूप से निर्माण स्थलों पर सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने का संदेश दिया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत ध्वजारोहण के साथ की गई। इसके बाद 24×7 जल वितरण परियोजना से जुड़े कर्मचारियों ने सुरक्षा शपथ ग्रहण कर सुरक्षित और स्वस्थ कार्यस्थल बनाए रखने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। इस दौरान सभी कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए सुरक्षा नियमों के पालन का संकल्प लिया।

कार्यक्रम के दौरान अधिकारियों ने कहा कि राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह का मुख्य उद्देश्य कर्मचारियों को कार्यस्थल पर सुरक्षा के प्रति जागरूक करना और दुर्घटनाओं को रोकने के लिए आवश्यक सावधानियों को अपनाने के लिए प्रेरित करना है। सुरक्षित कार्य वातावरण न केवल कर्मचारियों की सुरक्षा सुनिश्चित करता है बल्कि कार्य की गुणवत्ता और दक्षता को भी बढ़ाता है।

राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह के दौरान सुरक्षा जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा। इनमें मॉक ड्रिल, लिफ्टिंग प्रशिक्षण तथा सुरक्षा से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताएं शामिल होंगी। इन गतिविधियों के माध्यम से कर्मचारियों को कार्यस्थल पर सुरक्षित कार्य पद्धतियों के प्रति जागरूक किया जाएगा।

कार्यक्रम के अंत में सभी कर्मचारियों से अपील की गई कि वे सुरक्षा नियमों का पालन करते हुए अपने कार्यस्थल को सुरक्षित बनाने में सक्रिय भूमिका निभाएं, ताकि किसी भी प्रकार की दुर्घटना से बचा जा सके।

2.23 लाख करोड़ का विकास बजट हर वर्ग के लिए लाभकारी : विपिन लोहिया

परिवहन विशेष न्यूज

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने बतौर वित्तमंत्री वर्ष 2026-27 के लिए 2,23,658.17 करोड़ रुपये का बजट पेश किया है। प्रदेश सचिव भारतीय जनता युवा मोर्चा हरियाणा विपिन लोहिया ने इस बजट का स्वागत करते हुए कहा कि यह बजट प्रदेश के समग्र विकास, युवाओं के उज्ज्वल भविष्य, किसानों की समृद्धि और महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में ऐतिहासिक कदम साबित होगा। उन्होंने कहा कि यह बजट हर वर्ग को साथ लेकर आगे बढ़ने की सोच को दर्शाता है और इससे हरियाणा को नई विकास गति मिलेगी।

विपिन लोहिया ने कहा कि किसानों को कृषि के लिए बिजली का शीघ्र कनेक्शन और निर्बाध बिजली उपलब्ध कराने के उद्देश्य से हरियाणा एग्री डिस्कॉम के नाम से अलग बिजली वितरण कंपनी बनाई जाएगी, जो प्रदेश के 5084 कृषि फीडरों और लगभग 7.12 लाख कृषि उपभोक्ताओं को सेवाएं देगी। इससे किसानों को समय पर बिजली उपलब्ध होगी और खेती में आने वाली समस्याएं कम होंगी। साथ ही ग्राम सभाओं, पैक्स और श्रम एवं निर्माण समितियों को सशक्त बनाने का निर्णय ग्रामीण विकास को नई मजबूती देगा।

उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा सभी विभागों के सरकारी भवनों, स्वायत्त शैक्षणिक संस्थानों तथा पंजीकृत गौशालाओं को सौर ऊर्जा आधारित परिसरों में परिवर्तित करने का निर्णय पर्यावरण संरक्षण और ऊर्जा बचत की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इसके साथ ही प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में सार्वजनिक-निजी भागीदारी मॉडल पर आदर्श परीक्षा केंद्र स्थापित किए जाएंगे, जिससे विद्यार्थियों को बेहतर परीक्षा सुविधाएं मिल सकेंगी।

विपिन लोहिया ने कहा कि हरियाणा को स्वच्छ, हरित और जलवायु अनुकूल राज्य बनाने के उद्देश्य से 100 करोड़ रुपये के सीड प्रावधान के साथ हरियाणा ग्रीन क्लाइमेट रेजिलिएंस फंड की स्थापना की जाएगी। वहीं युवाओं की प्रतिभा को प्रोत्साहित करने के लिए मई 2026 में इनोवेशन चैलेंज का आयोजन किया जाएगा, जिसमें सर्वश्रेष्ठ एआई टीमों का चयन होगा और प्रदेश को तकनीक के क्षेत्र में आगे बढ़ाने का अवसर मिलेगा।

उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण पहल की गई है, जिसके तहत वर्ष 2026-27 में लगभग 3 लाख 14 वर्षीय किशोरियों को एचपीवी वैक्सीन लगाई जाएगी, जिससे भविष्य में गंभीर बीमारियों से बचाव संभव होगा। औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के लिए नई मेक इन हरियाणा नीति लागू की जाएगी, जिसके तहत सभी ब्लॉकों में औद्योगिक निवेश को प्रोत्साहन दिया जाएगा तथा रोजगार सब्सिडी 48 हजार रुपये से बढ़ाकर 1 लाख रुपये प्रति कर्मचारी प्रति वर्ष की जाएगी।

विपिन लोहिया ने बताया कि श्रमिकों के हितों को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2026-27 में अकुशल श्रमिकों की न्यूनतम मजदूरी बढ़ाने का निर्णय भी लिया जाएगा। इसके अलावा प्रदेश में यमुना नदी के जल प्रदूषण को समाप्त करने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में एक विशेष मिशन शुरू किया जाएगा।

बौद्ध धरा पर आस्था और करुणा की साँस

डॉ. परविंदर सिंह, अध्यक्ष, वर्ल्ड बौद्ध फेडरेशन

डॉ. परविंदर सिंह, अध्यक्ष, वर्ल्ड बौद्ध फेडरेशन ट्रस्ट

हाल ही में पेज3न्यूज़ वर्ल्डवाइड टीम द्वारा बोधगया में कराए गए एक सर्वेक्षण में पाया गया कि कई स्थानीय व्यापारियों और कारोबारियों को इन मंदिरों की वैध स्थिति की पूरी जानकारी नहीं है....

बोधगया, बिहार – भारत, जो बौद्ध धर्म की जन्मभूमि और प्राचीन आध्यात्मिक केंद्र माना जाता है, आज भी दुनिया भर के लाखों श्रद्धालुओं और शांति-प्रेमी यात्रियों को अपनी ओर आकर्षित करता है। हर वर्ष 29 से अधिक देशों से आस्था की धाराएँ इस पावन भूमि पर उमड़ती हैं, विशेष रूप से बोधगया में, जहाँ वह पवित्र बोधिवृक्ष स्थित है, जिसके नीचे भगवान बुद्ध के ज्ञान प्राप्त करने की मान्यता है।

इसी बढ़ती आध्यात्मिक और सांस्कृतिक गतिविधि के बीच, पर्यटन उद्योग के तेज़ विस्तार ने कुछ व्यावसायिक वर्गों में भ्रम भी पैदा कर दिया है। बोधगया और आसपास के क्षेत्रों में स्थापित अंतरराष्ट्रीय बौद्ध मंदिरों की भूमिका, उद्देश्य और कानूनी स्थिति को लेकर प्रश्न उठाए जा रहे हैं।

हाल ही में पेज3न्यूज़ वर्ल्डवाइड टीम द्वारा बोधगया में कराए गए एक सर्वेक्षण में पाया गया कि कई स्थानीय व्यापारियों और कारोबारियों को इन मंदिरों की वैध स्थिति की पूरी जानकारी नहीं है। कुछ लोगों का तो यह मानना था कि विदेशी मठ शायद नियमों से बाहर काम कर रहे हैं या स्थानीय व्यवसायों के साथ अनुचित प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं।

इन आशंकाओं के जवाब में वर्ल्ड बौद्ध फेडरेशन ट्रस्ट और अन्य आध्यात्मिक संस्थाओं ने स्पष्ट किया है कि क्षेत्र के लगभग सभी अंतरराष्ट्रीय बौद्ध मंदिर विधिवत रूप से चैरिटेबल या धार्मिक संस्थान के रूप में पंजीकृत हैं। ये भारतीय कानून के तहत कार्य करते हैं, स्थानीय स्तर पर रोज़गार उपलब्ध कराते हैं और आध्यात्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक आदान-प्रदान तथा अंतरराष्ट्रीय सद्भाव को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

धार्मिक नेता और भिक्षु बताते हैं कि ये मंदिर लाभ कमाने के केंद्र नहीं, बल्कि प्रार्थना, शिक्षा और सेवा के स्थान हैं। कई मठ निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर, शैक्षिक सहायता और मानवीय सेवाएँ चलाते हैं, जिनका लाभ स्थानीय समुदायों को जाति, धर्म या राष्ट्रीयता से परे मिल रहा है।

विशेषज्ञों का मानना है कि बोधगया की वैश्विक आध्यात्मिक पहचान स्थानीय अर्थव्यवस्था को मज़बूती देती है। एशिया, यूरोप और अमेरिका से आने वाले तीर्थयात्री और पर्यटक यहाँ आवास, भोजन, परिवहन और हस्तशिल्प पर ख़र्च करते हैं, जिससे हज़ारों परिवारों की आजीविका चलती है।

जब पूरी दुनिया शांति, करुणा और आंतरिक स्थिरता की खोज में है, ऐसे समय में बोधगया भगवान बुद्ध के संदेश का जीवित प्रतीक बनकर खड़ा है। व्यापारिक प्रतिस्पर्धा के रूप में इन्हें देखने के बजाय, सभी हितधारकों से अपील की जा रही है कि वे इन आध्यात्मिक संस्थाओं को विकास, सद्भाव और वैश्विक मित्रता के साझेदार के रूप में समझें।

(महिला दिवस विशेष) : सपनों की उड़ान: शिक्षिका और लेखिका डॉ. प्रियंका सौरभ

✍ डॉ. विजय गर्ग

समाज के इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जहाँ स्त्रियों ने सीमित संसाधनों और अनेक सामाजिक बंधनों के बावजूद अपने साहस, धैर्य और दृढ़ संकल्प से जीवन की नई दिशाएँ तय की हैं। स्त्री केवल परिवार की धुरी ही नहीं, बल्कि समाज की संवेदनशील चेतना भी है। जब एक स्त्री अपने भीतर की शक्ति को पहचान लेती है, तो वह केवल अपने जीवन को ही नहीं, बल्कि पूरे समाज को प्रेरित करने का सामर्थ्य रखती है। ऐसी ही प्रेरक कहानी है शिक्षिका, लेखिका और संवेदनशील विचारक डॉ. प्रियंका सौरभ की, जिनकी जीवन यात्रा संघर्ष, साधना और सृजन का सुंदर संगम है।

हरियाणा के हिसार जिले के आर्यनगर गाँव के साधारण ग्रामीण परिवेश में जन्मी डॉ. प्रियंका सौरभ का बचपन सामान्य परिस्थितियों में बीता। उनके जीवन में न तो विशेष संसाधन थे और न ही कोई विशेष सुविधा। लेकिन उनके भीतर शिक्षा प्राप्त करने और जीवन में कुछ सार्थक करने की गहरी इच्छा अवश्य थी। यही इच्छा आगे चलकर उनके संकल्प की शक्ति बन गई।

उनकी शिक्षा-यात्रा के दौरान ही जीवन ने एक बड़ा मोड़ लिया जब स्नातक की पढ़ाई के दौरान उनका विवाह हो गया। विवाह के बाद उनके सामने पत्नी, बहू और बाद में माँ की जिम्मेदारियाँ आ खड़ी हुईं। अक्सर भारतीय समाज में ऐसे अवसर पर लड़कियों की शिक्षा और उनके सपने पीछे छूट जाते हैं। घर-परिवार की जिम्मेदारियाँ ही उनका प्रमुख कार्यक्षेत्र बन जाती हैं। लेकिन डॉ. प्रियंका सौरभ ने परिस्थितियों को अपनी सीमाएँ बनने नहीं दिया। उन्होंने अपने जीवन की चुनौतियों को स्वीकार किया, लेकिन अपने सपनों को कभी त्यागा नहीं।

विवाह और पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ-साथ उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखी। यह कार्य आसान नहीं था। सीमित समय, घरेलू कार्यों का दबाव और सामाजिक अपेक्षाएँ—इन सबके बीच शिक्षा की राह पर आगे बढ़ना किसी तपस्या से कम नहीं था। लेकिन दृढ़ इच्छाशक्ति और निरंतर परिश्रम के बल पर उन्होंने राजनीति विज्ञान में डबल एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने एम.फिल की पढ़ाई पूरी की और आगे पीएच.डी. के शोध कार्य की दिशा में भी निरंतर प्रयासरत रहीं।

उनकी शैक्षणिक उपलब्धियाँ केवल डिग्रियों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह उस संघर्ष और समर्पण का परिणाम हैं जिसने हर कठिनाई को चुनौती दी। जीवन की इसी निरंतर साधना ने उन्हें सरकारी सेवा के क्षेत्र में भी सफलता दिलाई। पाँच बार सरकारी सेवा में चयनित होना किसी भी व्यक्ति के लिए बड़ी उपलब्धि है। यह उनके अथक प्रयास, आत्मविश्वास और लक्ष्य के प्रति समर्पण का प्रमाण है। अंततः उन्होंने हरियाणा शिक्षा विभाग में प्रवक्ता के रूप में अपनी पहचान स्थापित की।

एक शिक्षिका के रूप में डॉ. प्रियंका सौरभ केवल पाठ्यक्रम पढ़ाने तक सीमित नहीं रहतीं। वे अपने विद्यार्थियों के भीतर आत्मविश्वास, संवेदनशीलता और सकारात्मक सोच का बीज बोने का प्रयास करती हैं। उनके लिए शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया है। वे विद्यार्थियों को यह समझाने का प्रयास करती हैं कि जीवन में सफलता केवल अंकों या डिग्रियों से नहीं मिलती, बल्कि मेहनत, अनुशासन और निरंतर सीखने की इच्छा से मिलती है।

शिक्षण कार्य के साथ-साथ डॉ. प्रियंका सौरभ ने साहित्य के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय योगदान दिया है। उनके लिए लेखन केवल एक शौक नहीं, बल्कि जीवन की अभिव्यक्ति का माध्यम है। जब भी उन्हें समय मिलता, वे अपने अनुभवों, संवेदनाओं और सामाजिक सरोकारों को शब्दों में ढालने का प्रयास करतीं। धीरे-धीरे यह प्रयास एक सशक्त साहित्यिक यात्रा में बदल गया।

उनकी रचनाओं में स्त्री जीवन की संवेदनाएँ, सामाजिक विसंगतियाँ, मानवीय संबंधों की जटिलताएँ और जीवन के छोटे-छोटे अनुभवों की गहरी अनुभूति देखने को मिलती है। वे केवल कल्पना के संसार में नहीं रहतीं, बल्कि समाज के वास्तविक अनुभवों को अपनी लेखनी का आधार बनाती हैं।

उनका काव्य संग्रह "दीमक लगे गुलाब" रिश्तों की उन अदृश्य दरारों को उजागर करता है जो अक्सर दिखाई नहीं देतीं, लेकिन धीरे-धीरे संबंधों को भीतर से कमजोर कर देती हैं। इसी तरह "चूल्हे से चाँद तक" स्त्री जीवन के संघर्ष, सपनों और आकांक्षाओं की यात्रा को दर्शाता है। यह संग्रह बताता है कि स्त्री की दुनिया केवल घर की चारदीवारी तक सीमित नहीं है; उसके सपने आकाश की ऊँचाइयों तक पहुँच सकते हैं।

"मौन की मुस्कान" उनकी एक और महत्वपूर्ण कृति है जिसमें उन चुप्पियों को आवाज़ दी गई है

जिन्हें स्त्रियाँ अक्सर अपने भीतर ही समेट लेती हैं। यह संग्रह पाठकों को यह सोचने पर मजबूर करता है कि समाज में कितनी ही भावनाएँ और पीड़ाएँ ऐसी होती हैं जिन्हें शब्द नहीं मिल पाते।

बाल साहित्य के क्षेत्र में भी उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किया है। "परियों से संवाद" और "बच्चों की दुनिया" जैसी कृतियाँ बच्चों की कल्पनाशीलता, जिज्ञासा और संवेदनशीलता को अभिव्यक्त करती हैं। इन रचनाओं में बालमन की सहजता और सरलता को बहुत सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

निबंध लेखन के क्षेत्र में उनका संग्रह "समय की रेत पर" विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसमें उन्होंने सामाजिक परिवर्तनों, महामारी के दौर में मानव मनोविज्ञान और समाज में बदलती संवेदनाओं पर विचारपूर्ण लेख प्रस्तुत किए हैं।

इसी प्रकार "निर्भयें" स्त्री साहस और आत्मसम्मान की प्रेरक कहानियों का संग्रह है। यह कृति बताती है कि स्त्री यदि अपने भीतर के साहस को पहचान ले, तो वह किसी भी परिस्थिति का सामना कर सकती है। अंग्रेज़ी निबंध संग्रह "Fearless" में भी उन्होंने भारतीय स्त्री जीवन की शक्ति और संघर्ष को वैश्विक संदर्भ में प्रस्तुत किया है।

लघुकथा संग्रह "आँचल की चुप्पी" स्त्री मन की सूक्ष्म संवेदनाओं को बहुत मार्मिक ढंग से सामने लाता है। वहीं "खिड़की से झांकती ज़िंदगी" रोज़मर्रा के जीवन के अनुभवों को संवेदनशील दृष्टि से देखने का प्रयास है। इन सभी कृतियों के माध्यम से उन्होंने यह सिद्ध किया है कि साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज को दिशा देने वाला माध्यम भी है।

डॉ. प्रियंका सौरभ की लेखनी का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि वे समाज के उन विषयों को भी उठाती हैं जिन पर अक्सर कम चर्चा होती है। वे दिव्यांग बच्चों की समस्याओं, बुज़ुर्गों की उपेक्षा, शिक्षकों के मानसिक दबाव और समाज में बढ़ती संवेदनहीनता जैसे विषयों पर गंभीरता से लिखती हैं। उनकी रचनाएँ पाठकों को केवल पढ़ने के लिए नहीं, बल्कि सोचने के लिए प्रेरित करती हैं।

उनकी साहित्यिक यात्रा में अब तक दस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और विभिन्न समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं में उनके दस हजार से अधिक लेख प्रकाशित हो चुके हैं। यह संख्या केवल एक आँकड़ा नहीं, बल्कि उनके निरंतर लेखन और सामाजिक प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

साहित्य और समाज के क्षेत्र में उनके योगदान को अनेक संस्थाओं ने सम्मानित भी किया है। उन्हें आईपीएस मानव पुरस्कार, नारी रत्न, सुपर वुमन अवार्ड तथा कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुए हैं। हालांकि उनके लिए सबसे बड़ा सम्मान पाठकों का विश्वास और प्रेम है।

डॉ. प्रियंका सौरभ का जीवन यह सिखाता है कि संघर्ष जीवन का अंत नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत हो सकता है। यदि व्यक्ति अपने लक्ष्य के प्रति ईमानदार हो और निरंतर प्रयास करता रहे, तो कोई भी बाधा उसे आगे बढ़ने से नहीं रोक सकती।

आज जब समाज तेजी से बदल रहा है और जीवन की भागदौड़ में संवेदनाएँ कहीं खोती हुई दिखाई देती हैं, ऐसे समय में उनकी लेखनी हमें मानवीय मूल्यों की याद दिलाती है। वे यह संदेश देती हैं कि जीवन की सच्ची सफलता केवल व्यक्तिगत उपलब्धियों में नहीं, बल्कि समाज के प्रति अपने दायित्व को निभाने में भी होती है।

महिला दिवस के इस विशेष अवसर पर डॉ. प्रियंका सौरभ की यह यात्रा हमें यह प्रेरणा देती है कि स्त्री यदि अपने भीतर की शक्ति को पहचान ले, तो वह अपने

महिला दिवस पर विशेष : महिला दिवस: आत्ममंथन का समय

डॉ.गीतांजलि नीरज अरोड़ा 'गीत'

हर वर्ष हम 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाते हैं। इस अवसर पर प्रायः महिलाओं के साथ होने वाले अन्याय, उनके अधिकारों और उनके सशक्तीकरण की बातें की जाती हैं तथा पुरुषों से बराबरी की अपेक्षा रखी जाती है। किंतु यहाँ एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है—क्या वास्तव में स्त्री को पुरुषों से बराबरी करनी है, या स्त्री को स्त्री से बराबरी करनी है?

आज की स्त्री हर क्षेत्र में अपनी काबिलियत का परचम लहरा रही है और पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर हर दायित्व निभा रही है। इसमें कहीं न कहीं उन पुरुषों का भी बड़ा योगदान है, जिन्होंने महिलाओं को अपने बराबर का दर्जा दिया है। आज का युवा वर्ग यह भली-भांति समझ चुका है कि उसके साथ चलने वाली स्त्री को सम्मान और समानता देना आवश्यक है। यह सत्य है कि सभी पुरुष स्त्रियों को बराबरी का दर्जा नहीं देते, किंतु ऐसे पुरुषों की संख्या अब धीरे-धीरे कम हो रही है। यदि यह कहा जाए कि सौ में से लगभग सत्तर प्रतिशत पुरुष स्त्री को समान अधिकार देने के पक्ष में हैं, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस दृष्टि से स्त्रियाँ अब 'आधी आबादी' से आगे बढ़कर समाज की निर्णायक शक्ति बनती जा रही हैं।

आज जब स्त्रियाँ बड़े-बड़े पदों पर आसीन हैं और महत्वपूर्ण कार्यों को सफलतापूर्वक अंजाम दे रही हैं, तो उनके पीछे उनके जीवनसाथी, पिता, भाई या फिर उनके वरिष्ठ अधिकारी जैसे पुरुषों का सहयोग भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ऐसे में यह प्रश्न और अधिक प्रासंगिक हो जाता है कि स्त्री को बराबरी किससे करनी है?

मैं यह मानती हूँ कि स्त्री को सबसे पहले अपनी ही जैसी दूसरी स्त्री से बराबरी करनी होगी। मैं अपने लेखन में पहले भी कई बार यह बात कह चुकी हूँ कि "स्त्री को ही बनना होगा स्त्री का संबल।" जब एक स्त्री दूसरी स्त्री को आगे बढ़ते देखकर ईर्ष्या या द्वेष नहीं, बल्कि सहयोग और समर्थन का भाव रखेगी; उसकी योग्यता और सफलता पर प्रश्नचिह्न लगाने के बजाय उसे पूरे मन से स्वीकार करेगी—तभी स्त्री वास्तव में बराबरी का अधिकार पाएगी।

यह एक कटु सत्य है कि जहाँ एक ओर समाज और व्यवस्था के कारण स्त्रियों के साथ अन्याय होता है, वहीं दूसरी ओर घर के भीतर भी कई बार स्त्री ही स्त्री की पीड़ा का कारण बनती है। सास-बहू, ननद-भाभी, जेठानी-देवरानी या पड़ोस की स्त्रियाँ—अनेक बार स्त्री उत्पीड़न में अहम भूमिका निभाती हैं। इसके बाद पुरुषों की भूमिका आती है।

इसलिए आज आवश्यकता इस बात की है कि हम केवल पुरुषों से बराबरी की बात न करें, बल्कि स्त्रियों के बीच आपसी सम्मान, सहयोग और समानता की भावना को भी मजबूत करें। जब स्त्री, स्त्री की राह का रोड़ा नहीं बल्कि उसका सहारा बनेगी, तभी सही मायनों में महिला दिवस, महिला दिवस कहलाएगा।

डॉ गीतांजलि नीरज अरोड़ा 'गीत'
कवित्री, लेखिका, मोटिवेशनल काउंसलर, समाजसेविका,

ईरान और अरब देशों को बड़ा झटका- ईरान युद्ध, हॉर्मुज़ संकट और रूस से 30 दिन की तेल छूट-भड़की कांग्रेस, कबतक चलेगा अमेरिकी ब्लैकमेल- वैश्विक भू-राजनीति और बदलता तेल बाजार-समग्र विश्लेषण

वैश्विक स्तरपर पश्चिम एशिया में चल रहा सैन्य तनाव केवल क्षेत्रीय संघर्ष नहीं रह गया है, बल्कि उसने पूरी दुनियाँ की ऊर्जा सुरक्षा को चुनौती दे दी है ईरान और कई अरब देशों के बीच बढ़ते सैन्य टकराव ने वैश्विक तेल आपूर्ति की जीवनरेखा माने जाने वाले समुद्री मार्गों को अस्थिर कर दिया है।

इसका सबसे बड़ा प्रभाव उस संकीर्ण समुद्री मार्ग पर पड़ा है जिसके माध्यम से दुनियाँ का लगभग एक-तिहाई समुद्री तेल व्यापार गुजरता है। जैसे-जैसे संघर्ष बढ़ रहा है, तेल बाजार में अनिश्चितता और भय का माहौल बन गया है। ऐसे समय में भारत जैसे ऊर्जा आयात पर निर्भर देशों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वे अपनी घरेलू ऊर्जा जरूरतों को कैसे स्थिर रखें। इसी संदर्भ में अमेरिका द्वारा भारत को रूस से कच्चा तेल खरीदने के लिए 30 दिनों की अस्थायी छूट देना एक अत्यंत महत्वपूर्ण भू- राजनीतिक और आर्थिक निर्णय बन गया है जबकि कांग्रेस अमेरिका की ओर से मिली छूट को न सिर्फ भारतीय संप्रभुता पर हमला बता रही है, बल्कि केंद्र सरकार की यह कहकर आलोचना कर रही है कि आखिर अमेरिका इस तरह से हमें कबतक ब्लैकमेल करता रहेगा। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूँ कि यह निर्णय न केवल भारत की ऊर्जा सुरक्षा को प्रभावित करेगा, बल्कि वैश्विक ऊर्जा राजनीति के नए समीकरण भी स्थापित कर सकता है। बता दें भारत दुनियाँ का तीसरा सबसे बड़ा तेल उपभोक्ता देश है और अपनी ऊर्जा जरूरतों का बड़ा हिस्सा आयात के माध्यम से पूरा करता है। देश की अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है और इसके साथ ही ऊर्जा की मांग भी लगातार बढ़ रही है। पिछले कुछ वर्षों में भारत की दैनिक तेल खपत में लगातार वृद्धि हुई है और अनुमान है कि आने वाले वर्षों में यह और बढ़ेगी। ऐसी स्थिति में यदि वैश्विक आपूर्ति बाधित होती है तो उसका सीधा असर भारत की अर्थव्यवस्था पर पड़ सकता है। इसलिए भारत के लिए ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण और आपूर्ति की स्थिरता बनाए रखना अत्यंत आवश्यक हो गया है। इसी पृष्ठभूमि में अमेरिका द्वारा भारत को रूस से कच्चा तेल खरीदने की 30 दिन की अस्थायी छूट देना एक महत्वपूर्ण रणनीतिक कदम है। अमेरिकी वित्त विभाग ने यह स्पष्ट किया है कि यह छूट केवल उन तेल टैंकरों के लेन-देन के लिए दी गई है जो पहले से समुद्र में फंसे हुए हैं। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि वैश्विक बाजार में तेल का प्रवाह पूरी तरह से बाधित न हो। अमेरिकी अधिकारियों का कहना है कि यह कदम अल्पकालिक है और इससे रूसी सरकार को कोई बड़ा आर्थिक लाभ नहीं होगा। लेकिन यह वैश्विक ऊर्जा संकट को अस्थायी रूप से कम करने में मदद कर सकता है। इस संकट ने एक बार फिर रूस को वैश्विक ऊर्जा बाजार में महत्वपूर्ण खिलाड़ी बना दिया है। पश्चिमी प्रतिबंधों के बावजूद रूस दुनिया के सबसे बड़े तेल निर्यातकों में से एक बना हुआ है। पिछले कुछ वर्षों में भारत ने रूस से तेल आयात में काफी वृद्धि की है। इसका मुख्य कारण यह है कि रूसी तेल अपेक्षाकृत सस्ता मिलता है और भारत की रिफाइनरियों के लिए उपयुक्त भी है। वर्तमान संकट के दौरान रूस भारत के लिए एक महत्वपूर्ण वैकल्पिक स्रोत के रूप में सामने आया है। इससे दोनों देशों के बीच ऊर्जा सहयोग और बहुत सटीक मजबूत हो सकता है। साथियों बात अगर हम पश्चिम एशिया का संघर्ष और तेल आपूर्ति की अस्थिरता को समझने की करें तो, पश्चिम एशिया लंबे समय से विश्व ऊर्जा बाजार का केंद्र रहा है। दुनिया के सबसे बड़े तेल उत्पादक देशों का बड़ा हिस्सा इसी क्षेत्र में स्थित है। लेकिन वर्तमान संघर्ष ने इस पूरे क्षेत्र की स्थिरता को झकझोर दिया है। ईरान और उसके विरोधी देशों के बीच सैन्य टकराव ने तेल उत्पादन और निर्यात दोनों को प्रभावित किया है। कई तेल टैंकर समुद्र में फंस गए हैं और कई मार्गों पर सुरक्षा जोखिम इतना बढ़ गया है कि कंपनियां वहां से जहाज भेजने में हिचकिचा रही हैं। इस स्थिति ने वैश्विक बाजार में तेल की आपूर्ति को अस्थिर बना दिया है। परिणामस्वरूप अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव बढ़ गया है और ऊर्जा आयात पर निर्भर देशों के लिए स्थिति और जटिल हो गई है।

साथियों बात अगर हम हॉर्मुज़ जलडमरूमध्य : वैश्विक ऊर्जा की जीवनरेखा इसको समझने की करें तो पश्चिम एशिया के संकट का सबसे बड़ा प्रभाव उस समुद्री मार्ग पर पड़ा है जिसे वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति की धुरी कहा जाता है। यह जलमार्ग ईरान और अरब प्रायद्वीप के बीच स्थित है और दुनिया के तेल व्यापार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि इस मार्ग से आपूर्ति बाधित होती है तो उसका असर तुरंत वैश्विक तेल कीमतों पर पड़ता है। वर्तमान संघर्ष के कारण इस क्षेत्र में सैन्य गतिविधियां बढ़ गई हैं और कई जहाजों को रोकना या मोड़ना पड़ा है। इससे तेल की आपूर्ति में अनिश्चितता पैदा हो गई है। यही कारण है कि कई देशों ने वैकल्पिक आपूर्ति स्रोतों की तलाश शुरू कर दी है।

साथियों बात अगर हम भारतीय रिफाइनरियों की क्षमता और संभावनाएं इसको समझने की करें तो भारत के पास दुनियाँ की सबसे बड़ी रिफाइनिंग क्षमताओं में से एक है। देश की कई बड़ी रिफाइनरियां प्रतिदिन लाखों बैरल कच्चे तेल को संसाधित करने में सक्षम हैं। इन रिफाइनरियों की आयात क्षमता और भंडारण क्षमता यह तय करती है कि भारत कितनी मात्रा में तेल खरीद सकता है। विशेषज्ञों के अनुसार यदि भारत अपनी अधिकतम क्षमता का उपयोग करे तो वह अगले 30 दिनों में रूस से बड़ी मात्रा में कच्चा तेल आयात कर सकता है। ऐतिहासिक आंकड़े और संभावित आयात ऊर्जा क्षेत्र के आंकड़ों के अनुसार भारत ने पिछले वर्षों में रूस से तेल आयात के कई रिकॉर्ड बनाए हैं। उदाहरण के लिए जून 2025 में भारत ने प्रतिदिन लगभग 2.1 मिलियन बैरल रूसी तेल खरीदा था, जो अब तक का सबसे बड़ा आंकड़ा है। यदि भारत इसी स्तर पर फिर से आयात शुरू करता है तो 30 दिनों में लगभग 63 मिलियन बैरल तेल खरीदा जा सकता है। यह मात्रा भारत की ऊर्जा जरूरतों को कुछ समय तक स्थिर रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

साथियों बात अगर हम भारत की दैनिक तेल खपत और वास्तविकता इसको समझने की करें तो, भारत की दैनिक तेल खपत लगातार बढ़ रही है। हाल के वर्षों में यह आंकड़ा लगभग 5.6 मिलियन बैरल प्रतिदिन से बढ़कर 5.7 मिलियन बैरल तक पहुंच गया है। अनुमान है कि 2026 तक यह लगभग 6 मिलियन बैरल प्रतिदिन तक पहुंच सकता है। इस हिसाब से यदि भारत 30 दिनों में रूस से लगभग 60 मिलियन बैरल तेल आयात करता है तो यह देश की लगभग 10 दिनों की जरूरतों को पूरा करने के बराबर होगा। इसलिए यह छूट दीर्घकालिक समाधान नहीं है, लेकिन अल्पकालिक राहत जरूर प्रदान कर सकती है। तेल आयात केवल खरीद पर निर्भर नहीं करता, बल्कि इसके लिए पर्याप्त भंडारण और परिवहन व्यवस्था भी जरूरी होती है। भारत की रणनीतिक पेट्रोलियम भंडारण सुविधाएं सीमित हैं, हालांकि सरकार पिछले कुछ वर्षों में इन्हें बढ़ाने का प्रयास कर रही है। यदि भारत को बड़ी मात्रा में तेल आयात करना है तो रिफाइनरियों और भंडारण केंद्रों की क्षमता का भी पूरा उपयोग करना होगा। इसके अलावा समुद्री परिवहन और बीमा जैसी चुनौतियां भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। साथियों बात अगर हम समुद्र में फंसे टैंकर और तत्काल अवसर इसको समझने की करें तो, रूस के अनुसार लगभग 9 मिलियन बैरल तेल पहले से ही जहाजों में लोड होकर समुद्र में मौजूद है और भारत के संकेत का इंतजार कर रहा है। इसके अलावा लगभग 6 मिलियन बैरल तेल भेजने का अतिरिक्त प्रस्ताव भी दिया गया है। इस तरह कुल मिलाकर लगभग 15 मिलियन बैरल तेल तुरंत उपलब्ध हो सकता है। यदि भारत तेजी से निर्णय लेता है तो वह इस अवसर का लाभ उठाकर अपनी ऊर्जा आपूर्ति को मजबूत कर सकता है।

साथियों बात अगर हम अमेरिका - भारत ऊर्जा संबंध और रणनीतिक संतुलन को समझने की करें तो अमेरिका ने यह भी संकेत दिया है कि वह चाहता है कि भारत भविष्य में अमेरिकी तेल की खरीद बढ़ाए। पिछले कुछ वर्षों में अमेरिका भारत के लिए एक महत्वपूर्ण ऊर्जा आपूर्तिकर्ता बनकर उभरा है। लेकिन भारत की ऊर्जा नीति हमेशा बहु-स्रोत रणनीति पर आधारित रही है। इसका उद्देश्य यह है कि किसी एक देश या क्षेत्र पर अत्यधिक निर्भरता न हो। इसलिए भारत अमेरिका, रूस, मध्य-पूर्व और अन्य देशों से तेल खरीदकर अपने ऊर्जा स्रोतों को संतुलित रखने की कोशिश करता है।

साथियों बात अगर हम वैश्विक तेल बाजार पर संभावित प्रभाव को समझने की करें तो, यदि पश्चिम एशिया का संकट लंबे समय तक जारी रहता है तो इसका असर वैश्विक तेल बाजार पर गहरा पड़ सकता है। तेल की कीमतों में तेजी आने से दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाओं पर दबाव बढ़ेगा। विशेष रूप से विकासशील देशों के लिए यह स्थिति चुनौतीपूर्ण हो सकती है क्योंकि उनकी अर्थव्यवस्था ऊर्जा आयात पर अधिक निर्भर होती है। ऐसे में वैकल्पिक आपूर्ति स्रोतों और रणनीतिक भंडारण की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाएगी। भू-राजनीतिक संतुलन और भारत की कूटनीति भारत की विदेश नीति हमेशा संतुलन और बहुपक्षीय सहयोग पर आधारित रही है। वर्तमान संकट में भी भारत को अमेरिका, रूस और पश्चिम एशिया के देशों के साथ अपने संबंधों को संतुलित रखना होगा। एक ओर भारत को अपनी ऊर्जा जरूरतों को सुरक्षित रखना है, तो दूसरी ओर उसे वैश्विक राजनीतिक समीकरणों को भी ध्यान में रखना होगा। यह एक जटिल कूटनीतिक चुनौती है, लेकिन भारत ने अतीत में भी ऐसे संतुलन को सफलतापूर्वक बनाए रखा है। वर्तमान संकट ने यह स्पष्ट कर दिया है कि ऊर्जा सुरक्षा केवल आयात पर निर्भर रहकर सुनिश्चित नहीं की जा सकती। भारत को दीर्घकालिक रणनीति के तहत वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों जैसे सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और हाइड्रोजन पर अधिक निवेश करना होगा। इसके साथ ही घरेलू तेल और गैस उत्पादन को भी बढ़ाने की जरूरत है। रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार का विस्तार भी ऊर्जा सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़ि संकट में अवसर और भविष्य की दिशा, पश्चिम एशिया में चल रहा संघर्ष वैश्विक ऊर्जा व्यवस्था के लिए एक गंभीर चेतावनी है।

अमित शाह ने पारादीप में सल्फ्यूरिक एसिड प्लांट का उद्घाटन किया, CISF के स्थापना दिवस में शामिल हुए, मार्च तक भारत नक्सल-मुक्त हो जाएगा

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री अमित शाह ने ओडिशा का दौरा किया और कई प्रोजेक्ट्स की नींव रखी और उन्हें लोगों को समर्पित किया। इस मौके पर उन्होंने कहा, भारत अब तेज़ी से विकास की ओर बढ़ रहा है। सरकार नक्सलवाद के खिलाफ़ निर्णायक लड़ाई लड़ रही है। अगले मार्च तक देश नक्सलवाद से मुक्त हो जाएगा, यह पक्का है ।डबल इंजन सरकार ओडिशा के विकास के लिए कमिटेड है। हमारी सरकार अगले 5 सालों में 20 साल में हुए नुकसान की भरपाई करेगी।

अमित शाह ने पारादीप में 3275 करोड़ रुपये के प्रोजेक्ट का शिलान्यास और लोकार्पण किया और एक सल्फ्यूरिक एसिड प्लांट भी शुरू किया। इससे हर दिन करीब 2,000 टन सल्फ्यूरिक एसिड बनेगा। हम हर साल विदेश से 6 लाख मीट्रिक टन सल्फ्यूरिक एसिड इंपोर्ट करते हैं। यह प्लांट पूरी तरह चालू हो जाने के बाद देश को इसे इंपोर्ट नहीं करना पड़ेगा। केंद्रीय मंत्री कटक में CISF के 75वें स्थापना दिवस पर चीफ गेस्ट के तौर पर शामिल हुए। इस मौके पर उन्होंने कहा, CISF ने मॉडर्निटी और ट्रेडिशन को अपनाया है। यह देश के 70 एयरपोर्ट समेत 361 अहम इंस्टीट्यूशन की सुरक्षा जिम्मेदारी को मजबूत कर रहा है। 2047 के डेवलप्ड इंडिया के लिए CISF का रोल अहम है। उन्होंने कहा कि पारादीप प्लांट एग्रीकल्चर सेक्टर के लिए बहुत मददगार होगा। उन्होंने ओडिशा की नई कोऑपरेटिव पॉलिसी का भी अनावरण किया। उन्होंने भुवनेश्वर एग्जीबिशन ग्राउंड में कई प्रोजेक्ट्स का शिलान्यास और लोकार्पण किया। शाह ने न्याय संहिता एग्जीबिशन का भी उद्घाटन किया।

मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी कार्यक्रम में शामिल हुए और कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय मंत्री अमित शाह राज्य के विकास के लिए प्रतिबद्ध हैं। राज्य में कोऑपरेटिव सेक्टर में एक नई क्रांति आने वाली है। इसके लिए उन्होंने राज्य के लोगों की ओर से आभार व्यक्त किया। केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि लगभग 750 करोड़ रुपये की लागत से लोगों को समर्पित सल्फ्यूरिक एसिड प्लांट 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान को मजबूत करेगा। फर्टिलाइजर प्रोडक्शन की लागत कम होगी, और ओडिशा समेत भारत के सभी किसानों को फायदा होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का ₹पूर्वोदय₹ विजन पारादीप में हकीकत बन रहा है।

सशक्त काव्य साधिका आशमा कौल को मिला 'दरियाव मल्ल सम्मान'

डॉ. शंभु पंवार

नई दिल्ली, 6 मार्च ।बीएमएन सेवा संस्थान, लखनऊ द्वारा आयोजित भव्य समारोह में वरिष्ठ लेखिका एवं साहित्यकार आशमा कौल को हिंदी साहित्य में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रतिष्ठित 'दरियाव मल्ल सम्मान' से अलंकृत किया गया।

समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में मनोज कांत (निदेशक, राष्ट्र धर्म पत्रिका एवं क्षेत्रीय प्रचार प्रमुख, आरएसएस), पवन सिंह (सदस्य, विधान परिषद), कामेश्वर सिंह (अध्यक्ष, भाजपा किसान मोर्चा) तथा प्रकाश गुप्ता (आईएएस) उपस्थित रहे। अतिथियों ने आशमा कौल (फरीदाबाद) को उनकी सशक्त काव्य साधना और साहित्य के प्रति निरंतर समर्पण के लिए सम्मान-पत्र एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि आशमा कौल की लेखनी मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक यथार्थ और आत्मिक अनुभूतियों को अत्यंत प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करती है। उनकी रचनाएँ साहित्यिक सरोकारों को नई दृष्टि प्रदान करती हैं और समाज में सकारात्मक चेतना का संचार करती हैं।

सम्मान प्राप्त करने के बाद आशमा कौल ने बीएमएन सेवा संस्थान के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह सम्मान उन्हें भविष्य में और अधिक गंभीर एवं सशक्त साहित्य सृजन के लिए प्रेरित करेगा ।समारोह में दिल्ली, हरियाणा, पश्चिम बंगाल, केरल, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु सहित विभिन्न राज्यों से चयनित रचनाकारों को भी उनके साहित्यिक योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

तीसरे विश्व युद्ध की आहट

डॉ. नीरज भारद्वाज

इतिहास हमें बहुत कुछ बताता और समझाता है। इतिहास को सही से पढ़ा और समझा जाए तो किसी भी व्यक्ति और देश को उससे सीख लेकर गलती को दोहराना नहीं चाहिए। यदि कोई दोहराता है तो उसे सीधे शब्दों में अज्ञानी और मूर्ख कहा जा सकता है। दो विश्व युद्धों के इतिहास को पढ़ा जाए जिससे हमें वर्तमान में हो रहे इस भयानक विश्व युद्ध के सभी पक्ष वैसे ही दिखाई दे जाते हैं जो पहले दो विश्व युद्धों के हैं। 28 जून,1914 को साराजेवो में ऑस्ट्रिया-हंगरी सिंहासन के उत्तराधिकारी आर्कड्यूक फ्रांज फर्डिनेंड और उनकी पत्नी सोफी की हत्या हुई। यही हत्या प्रथम विश्व युद्ध का तात्कालिक सबसे बड़ा कारण बनी। इस हत्या को बोस्नियाई सर्ब राष्ट्रवादी गैवरिलो प्रिंसिप ने अंजाम दिया था। गैवरिलो प्रिंसिप 'यंग बोस्निया' नामक समूह से जुड़ा राष्ट्रवादी माना जाता है। आर्कड्यूक की हत्या के बाद ऑस्ट्रिया-हंगरी ने सर्बिया पर युद्ध की घोषणा कर दी और देखते ही देखते यह वैश्विक संघर्ष में बदल गया। 1914 से 1918 के बीच चले इस विनाशकारी युद्ध में विश्व के लगभग सभी देश प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ गए।

वर्तमान युद्ध की स्थिति पर नजर दौड़ाकर देखें तो हमें पता चलता है कि 28 फरवरी, 2026 को ईरान के सर्वोच्च नेता अली खामेनेई और उसके पूरे परिवार की हत्या तेहरान के नजदीक इजरायल-अमेरिका द्वारा किए गए मिसाइल हमलों से कर दी गई। विचार करें तो यह हमले उच्च पदस्थ ईरानी अधिकारियों को निशाना बनाकर किए गए थे। ईरानी सरकार ने 1मार्च, 2026 को खामेनेई की मृत्यु की पुष्टि कर दी. इससे पूरे ईरान में इजरायल-अमेरिका के प्रति बदले की भावना भड़क उठी। हालांकि युद्ध के बादल पहले से ही बने हुए थे लेकिन इस घटना से ईरान को गहरा आघात लगा।

अब चलते हैं दूसरे विश्व युद्ध की ओर. सन 1929 में विश्व में महामंदी का दौर आया। यह महामंदी का दौर 1929 से 1939 अर्थात दस वर्षों तक चला। इस महामंदी के मुख्य कारणों में अक्टूबर 1929 का अमेरिकी शेयर बाजार (वॉल स्ट्रीट) का पतन, बैंकों की व्यापक विफलता, अत्यधिक उत्पादनऔर कम उपभोग (क्रय शक्ति में कमी) की कमी माने जाते हैं। इसके साथ ही अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में गिरावट, गलत सरकारी नीतियां तथा कृषि क्षेत्र में संकट ने इस वैश्विक आर्थिक तबाही को बदतर बना दिया। इसी समय अमेरिका ने विदेशी सामानों पर भारी टैक्स लगा दिया (स्मूट-हॉली टैरिफ) जिसके जवाब में अन्य देशों ने भी ऐसा ही किया। इससे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार लगभग ठप हो गया।

अब वर्तमान में चल रहे वैश्विक युद्ध की स्थिति को समझें तो हमें पता चलता है कि 2019 के अंत में कोविड विश्व में फैला। इसने पूरे विश्व को लॉकडाउन की ओर धकेल दिया। 2020 और 2021 दोनों ही वर्ष लगभग लॉकडाउन में ही चले गए। चारों ओर भय का वातावरण बना। इससे विश्व की आर्थिक स्थिति चरमरा गई। कोविड से बाहर निकले ही थे कि रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध हो गया। इस युद्ध में अप्रत्यक्ष रूप से यूक्रेन का साथ देने के लिए अमेरिका और यूरोप के देश शामिल हो गए। देखते ही देखते अमेरिका में सत्ता परिवर्तन हुआ और ट्रंप सरकार ने आते ही दुनिया को टैरिफ के उलटे-सीधे दबाव में धकेल दिया। अमेरिका ने पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था को धूमिल करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। दूसरे विश्वयुद्ध से पहले आर्थिक मंदी दस वर्ष चली जबकि कोविड के पाँच वर्ष बाद ही अमेरिका ने टैरिफ का दाव चला अर्थात अमेरिका महामंदी के दौर से गुजर रहा था। उसका परिणाम यह हुआ है कि आज विश्व के देश तीसरे विश्वयुद्ध की दहलीज पर खड़े हुए हैं। वर्तमान में इजरायल-अमेरिका मिलकर ईरान पर हमला कर रहे हैं। ईरान अपने पड़ोसी देशों में बने अमेरिका के एयरबेस और सैनिक ठिकानों को निशाना बना रहा है। सही मायने में ईरान ने अपने पड़ोसी देशों को भी इस युद्ध की चपेट में ले लिया है। इधर अफगानिस्तान पाकिस्तान के बीच युद्ध चल रहा है। पाकिस्तान बलूचिस्तान के लड़ाकों के बीच में युद्ध लगातार जारी है। रूस और यूक्रेन के युद्ध को चलते हुए लगभग 4 वर्ष से अधिक का समय हो गया है।

अन्न से आत्मनिर्भरता तक: विश्व अनाज दिवस का संदेश(7 मार्च दिवस विशेष आलेख)

-सुनील कुमार महला

अनाजों के महत्व, पोषण और खाद्य सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 7 मार्च को विश्व अनाज दिवस (वर्ल्ड सीरियल डे) मनाया जाता है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि 'सीरियल' शब्द की उत्पत्ति प्राचीन रोमन देवी सेरेस के नाम से हुई है। दरअसल, रोमन पौराणिक कथाओं में सेरेस को खेती, फसल और मातृत्व की देवी माना जाता था और उन्हीं के सम्मान में अनाज को 'सीरियल' कहा जाने लगा। वैसे, गेहूं, चावल, मक्का, जौ और जई जैसे खाद्यान्न सीरियल्स की श्रेणी में आते हैं।

'विश्व अनाज दिवस' वस्तुतः खाद्य सुरक्षा की नींव को रेखांकित करता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि गेहूं, चावल, मक्का, जौ और बाजरा जैसे अनाज केवल भोजन नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के आधार स्तंभ हैं। उल्लेखनीय है कि आज विश्व की आधी से अधिक आबादी की दैनिक ऊर्जा आवश्यकताएँ मुख्यतः तीन अनाजों-गेहूं, चावल और मक्का से ही पूरी होती हैं। यदि अनाज न हों, तो वैश्विक खाद्य सुरक्षा की कल्पना भी संभव नहीं। आज जब दुनिया जलवायु परिवर्तन, जनसंख्या वृद्धि और भूख जैसी चुनौतियों का लगातार सामना कर रही है, तब अनाजों का महत्व और बढ़ जाता है। आज तापमान में वृद्धि, अनियमित वर्षा और सूखा जैसी परिस्थितियाँ विशेषकर गेहूं और चावल की पैदावार को प्रभावित कर रही हैं। ऐसे में टिकाऊ कृषि पद्धतियाँ अपनाना समय की आवश्यकता है।

भारत के संदर्भ में देखें तो हमारा देश विश्व के प्रमुख गेहूं और चावल उत्पादक देशों में शामिल है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) के माध्यम से करोड़ों लोगों तक सस्ती दरों पर अनाज पहुँचाया जाता है। हाल के वर्षों में मोटे अनाज-जैसे बाजरा, ज्वार और रागी आदि को पुनः प्रोत्साहित किया जा रहा है, क्योंकि ये पोषक तत्वों से भरपूर होने के साथ-साथ कम पानी में भी उगाए जा सकते हैं। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि भारत की पहल पर संयुक्त राष्ट्र महासभा ने वर्ष 2023 को 'अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष' घोषित किया, जिससे वैश्विक स्तर पर मोटे अनाजों के महत्व को नई पहचान मिली।

'विश्व अनाज दिवस' का उद्देश्य केवल उत्पादन बढ़ाना नहीं, बल्कि अनाजों के पोषण मूल्य, खाद्य अपव्यय रोकने, संतुलित आहार अपनाने और किसानों के परिश्रम के सम्मान के प्रति जागरूकता फैलाना भी है। वास्तव में यह दिवस कुपोषण और भूख की समस्या को कम करने, टिकाऊ कृषि (सस्टेनेबल एग्रीकल्चर) को बढ़ावा देने तथा खाद्य सुरक्षा में किसानों की भूमिका को रेखांकित करता है।

इतिहास की दृष्टि से 'जौ' को दुनिया के सबसे प्राचीन खेती किए गए अनाजों में से एक माना जाता है, जिसके प्रमाण लगभग 10,000 वर्ष पुराने मिलते हैं। इतिहासकारों का मत है कि मिस्र, मेसोपोटामिया और सिंधु घाटी जैसी प्राचीन सभ्यताओं का विकास कृषि, विशेष रूप से अनाज उत्पादन, के कारण ही संभव हुआ।

आज बाजरा, ज्वार और रागी जैसे मोटे अनाजों को 'फ्यूचर फूड' कहा जा रहा है। ये प्रायः ग्लूटेन-रहित होते हैं और आयरन व कैल्शियम जैसे पोषक तत्वों से समृद्ध होते हैं। पर्यावरणीय दृष्टि से भी कुछ अनाज अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए, 'पेरेनियल ग्रेन्स' (बारहमासी अनाज) ऐसी फसलें हैं जिन्हें हर वर्ष दोबारा बोने की आवश्यकता नहीं पड़ती। इनकी गहरी जड़ें मिट्टी के कटाव को रोकती हैं और कार्बन अवशोषण में सहायक होती हैं।

पाठक जानते होंगे कि मक्का विश्व में सर्वाधिक उगाई जाने वाली फसल है, किंतु इसका बड़ा हिस्सा प्रत्यक्ष भोजन के बजाय एथेनॉल (ईंधन) और पशु आहार के रूप में प्रयुक्त होता है। यह भी उल्लेखनीय है कि विश्व में उत्पादित अनाज का बड़ा भाग भंडारण और परिवहन के दौरान नष्ट हो जाता है। यदि इस अपव्यय को रोका जाए तो करोड़ों लोगों की भूख मिटाई जा सकती है।

19वीं सदी के अंत में डॉ. जॉन हार्वे केलॉग ने कॉर्नफ्लेक्स जैसे ब्रेकफास्ट सीरियल का आविष्कार किया था। उनका उद्देश्य इसे सादा और स्वास्थ्यवर्धक भोजन के रूप में प्रस्तुत करना था, ताकि लोग अत्यधिक मसालेदार और गरिष्ठ भोजन से बच सकें।

अनाज ऊर्जा, फाइबर, विटामिन और खनिजों का महत्वपूर्ण स्रोत हैं। विश्व की बड़ी आबादी का मुख्य भोजन अनाज ही है, जिनमें गेहूं और चावल का उपभोग सर्वाधिक होता है। जलवायु परिवर्तन का अनाज उत्पादन पर सीधा प्रभाव पड़ रहा है, जिससे खाद्य सुरक्षा की चुनौतियाँ और गंभीर हो सकती हैं।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि 'विश्व खाद्य दिवस' प्रतिवर्ष 16 अक्टूबर को मनाया जाता है। यह दिवस 16 अक्टूबर 1945 को स्थापित खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) की स्थापना की स्मृति में मनाया जाता है, जो संयुक्त राष्ट्र की एक विशेषीकृत एजेंसी है। भोजन का अधिकार 1948 की सार्वभौमिक मानवाधिकार घोषणा-पत्र द्वारा मान्यता प्राप्त है। वर्ष 2025 में विश्व खाद्य दिवस की थीम थी-'बेहतर भोजन और बेहतर भविष्य साथ-साथ।'

भारत में अन्न उत्पादन की स्थिति सुदृढ़ हुई है। आंकड़े बताते हैं कि पिछले दशक में देश का अन्न उत्पादन लगभग 90 मिलियन मीट्रिक टन बढ़ा है। इतना ही नहीं, फल और सब्ज़ियों का उत्पादन भी 64 मिलियन मीट्रिक टन से अधिक बढ़ा है। भारत दूध और बाजरा (मिलेट्स) के उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान पर है, जबकि मछली, फल और सब्ज़ियों के उत्पादन में दूसरा स्थान रखता है। वर्ष 2014 के बाद से शहद और अंडे का उत्पादन दोगुना हो चुका है।

भारत सरकार की प्रमुख पहलों में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013; प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना; पीएम पोषण योजना; अंत्योदय अन्न योजना; राइस फोर्टिफिकेशन तथा प्राइस स्टेबिलाइज़ेशन फंड (पीएसएफ) शामिल हैं, जो खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने की प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करती हैं।

इसी क्रम में 'विश्व दलहन दिवस' (वर्ल्ड पल्सेस डे) प्रतिवर्ष 10 फरवरी को मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2016 को 'अंतरराष्ट्रीय दलहन वर्ष' घोषित किया था। दालें न केवल पोषण का केंद्र हैं, बल्कि 'क्लाइमेट-स्मार्ट' फसलें भी मानी जाती हैं, क्योंकि इनमें नाइट्रोजन फिक्सेशन की क्षमता होती है। इनके पौधों की जड़ों में उपस्थित बैक्टीरिया वायुमंडलीय नाइट्रोजन को अवशोषित कर मिट्टी की उर्वरता बढ़ाते हैं, जिससे कृत्रिम उर्वरकों पर निर्भरता कम होती है।

पर्यावरणीय दृष्टि से दालों का जल पदचिह्न(वाटर फुटप्रिंट) अत्यंत कम है ।एक उपलब्ध जानकारी के अनुसार जहाँ एक किलोग्राम बीफ उत्पादन में लगभग 15,000 लीटर पानी की आवश्यकता होती है, वहीं उतनी ही मात्रा में दाल उगाने के लिए केवल 50 से 200 लीटर पानी पर्याप्त होता है। पोषण के स्तर पर दालें प्रोटीन का सस्ता और प्रभावी स्रोत हैं। इनमें अनाज की तुलना में दो से तीन गुना अधिक प्रोटीन तथा आयरन, जिंक और फाइबर प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। शून्य कोलेस्ट्रॉल और कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स के कारण ये हृदय रोग और मधुमेह प्रबंधन में सहायक हैं।

वैश्विक परिदृश्य में भारत की भूमिका विशिष्ट है। भारत विश्व की लगभग 25% दालों का उत्पादक और 27% उपभोक्ता है। वर्ष 2026 के हालिया आँकड़ों के अनुसार, भारत चना और मूंग जैसी प्रमुख दालों में आत्मनिर्भरता की दिशा में तेज़ी से अग्रसर है। कभी 'गरीबों का प्रोटीन' कही जाने वाली दालें आज 'भविष्य का भोजन' मानी जा रही हैं।

अंततः, विश्व अनाज दिवस हमें यह संदेश देता है कि अनाज केवल भोजन नहीं, बल्कि मानव सभ्यता, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण संतुलन की आधारशिला हैं। जलवायु परिवर्तन और बढ़ती जनसंख्या के दौर में इनका संरक्षण, टिकाऊ उत्पादन और खाद्य अपव्यय पर नियंत्रण अत्यंत आवश्यक है। आइए, हर दाने का सम्मान करें और सुरक्षित, पोषित एवं समृद्ध भविष्य के निर्माण का संकल्प लें।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार, पिथौरागढ़, उत्तराखंड।

भारत में महिलाओं के प्रति बदलने लगा है नज़रिया

रमेश सर्राफ धमोरा

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक उपलब्धियों का जश्न मनाने और लैंगिक समानता की वकालत करने के लिए मनाया जाता है। यह जागरूकता बढ़ाने, बाधाओं को तोड़ने और सभी के लिए समान अवसरों को बढ़ावा देने का दिन है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि जब महिलाएं आगे बढ़ती हैं तो समाज और राष्ट्र मजबूत होते है। यह समानता और अधिकारों के लिए एक वैश्विक आंदोलन है, जो महिलाओं के सम्मान और उनके अधिकारों के लिए संघर्ष का प्रतीक है। यह एक ऐसा दिन है जो महिलाओं को सपने देखने और उन्हें पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस हर साल 8 मार्च 1911 से पूरे विश्व में मनाया जाता है। जिसका उद्देश्य महिलाओं की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक उपलब्धियों का जश्न मनाना है। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2026 की थीम है दान से लाभ है, जो उदारता, सहयोग और सामूहिक प्रगति के मूल्यों को बढ़ावा देता है। यह अभियान इस बात पर प्रकाश डालता है कि महिलाओं का समर्थन करना और लैंगिक समानता को आगे बढ़ाना सभी के लिए व्यापक सामाजिक और आर्थिक लाभ ला सकता है। इस अभियान का मूल विचार यह है कि जब महिलाएं शिक्षा, नेतृत्व, उद्यमिता, विज्ञान, कला और राजनीति जैसे क्षेत्रों में सशक्त होती हैं, तो इससे मजबूत समुदाय और साझा समृद्धि का निर्माण होता है। सहयोग और समान अवसरों को प्रोत्साहित करके, यह अभियान समाज में समावेशी विकास और सकारात्मक बदलाव को बढ़ावा देना चाहता है।

भारत में महिलाओं की सुरक्षा और इज्जत का खास ख्याल रखा जाता है। अगर हम इक्कीसवीं सदी की बात करे तो यहां की महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिला काम कर रही है। अब तो भारत की संसद ने भी महिलाओं के लिये लोकसभा व विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण का विधेयक पास कर दिया है। उससे आने वाले समय में भारत की राजनीति में महिलाओं की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण हो जायेगी। देश में महिलाओं को अब सेना में भी महत्वपूर्ण पदो पर तैनात किया जाने लगा है। जो महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक बड़ा कदम है।

यहां महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार है। महिलायें देश की आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करती है तथा विकास में भी बराबर की भागीदार है। आज के युग में महिला पुरुषों के साथ ही नहीं बल्कि उनसे दो कदम आगे निकल चुकी है। महिलाओं के बिना समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। भारतीय संविधान के अनुसार महिलाओं को भी पुरुषों के समान जीवन जीने का हक है। भारत में नारी को देवी के रूप में देखा गया है। कहा जाता है कि जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। प्राचीन काल से ही यहां महिलाओं को समाज में विशिष्ट आदर एवं सम्मान दिया जाता है।

भारत में वर्षो से महिला सुरक्षा से जुड़े कई कानून बने है। इसमें हिंदू विडो रीमैरिज एक्ट 1856, इंडियन पीनल कोड 1860, मैटरनिटी बेनिफिट एक्ट 1861, क्रिस्चियन मैरिज एक्ट 1872, मैरिड वीमेन प्रॉपर्टी एक्ट 1874,चाइल्ड मैरिज एक्ट 1929, स्पेशल मैरिज एक्ट 1954, हिन्दू मैरिज एक्ट 1955, फॉरेन मैरिज एक्ट 1969, इंडियन डाइवोर्स एक्ट 1969, मुस्लिम वुमन प्रोटेक्शन एक्ट 1986, नेशनल कमीशन फॉर वुमन एक्ट 1990, सेक्सुअल हर्रास्मेंट ऑफ वुमन एट वर्किंग प्लेस एक्ट 2013 आदि। इसके अलावा 7 मई 2015 को लोक सभा ने और 22 दिसम्बर 2015 को राज्य सभा ने जुवेनाइल जस्टिस बिल में भी बदलाव किया है। इसके अन्तर्गत यदि कोई 16 से 18 साल का किशोर जघन्य अपराध में लिप्त पाया जाता है तो उसे भी कठोर सजा का प्रावधान है।

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के मुताबिक साल 2023 में भारत में महिलाओं के खिलाफ कुल 4,05,861 अपराध दर्ज किए गए। इन अपराधों में बलात्कार, छेड़छाड़, दहेज उत्पीड़न, घरेलू हिंसा, यौन उत्पीड़न, साइबर अपराध, और अपहरण जैसे गंभीर अपराध शामिल हैं। इनमें सबसे ज्यादा मामले घरेलू हिंसा और यौन उत्पीड़न के सामने आए हैं ।जो समाज में महिलाओं की सुरक्षा के प्रति हमारी उदासीनता को दर्शाते हैं। इससे पहले 2022 में 4,45,256 मामले, 2021 में 4,28,278मामले 2020 में 3,71,503 मामले दर्ज किए गए थे।

राष्ट्रीय महिला आयोग की ओर से जारी आंकड़ों के मुताबिक 2023 में महिलाओं के खिलाफ अपराध के मामले में उत्तर प्रदेश सबसे आगे रहा। राष्ट्रीय महिला आयोग की तरफ से जारी आंकड़ों के मुताबिक देश भर से पूरे साल में महिलाओं के खिलाफ अपराध की 28,811 शिकायतें मिलीं। इसमें 16 हजार से ज्यादा मामले उत्तर प्रदेश राज्य से आए हैं। आंकड़े हैरान कर देने वाली हैं। क्योंकि आयोग में ये शिकायत गरिमा के अधिकार कैटेगरी के अंतर्गत दर्ज किया गया है। इसके बाद दूसरे नंबर पर राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में 2,411 मामले दर्ज किए गए। महाराष्ट्र में 1,343, बिहार में 1,312 और मध्य प्रदेश में 1,165 इतने मामले दर्ज किए गए हैं।

2023 के 12 महीने बाद जारी किए गए इस रिपोर्ट में महिलाओं के प्रति हो रहे अपराध में दहेज उत्पीड़न और दुष्कर्म जैसे अपराध दर्ज किए गए हैं। राष्ट्रीय महिला आयोग की यह रिपोर्ट महिलाओं के प्रति पुलिस की उदासीनता दिखाती है। आंकड़ों के मुताबिक देश भर में यौन उत्पीड़न के 805 मामले, साइबर अपराध के 605 मामले, पीछा करने की 472 मामले और सम्मान से जुड़े अपराध के खिलाफ 409 शिकायतें दर्ज कराई गईं। आंकड़ों के मुताबिक, महिलाओं के खिलाफ अपराधों में बलात्कार के मामले भी शामिल हैं। साल 2023 में बलात्कार और बलात्कार के प्रयास के 1,537 मामले दर्ज किए गए। इसके बाद गरिमा के अधिकार के तहत 8,540, घरेलू हिंसा के 6,274, दहेज उत्पीड़न के 4,797, छेड़छाड़ के 2,349,और महिलाओं के प्रति पुलिस की उदासीनता के 1,618 मामले दर्ज किए गए।

2023 में महिलाओं के खिलाफ अपराध के मामले 2022 की तुलना में कम हुए हैं। 2022 में महिलाओं के खिलाफ अपराध के 30,864 मामले दर्ज किए गए थे। जबकि 2023 में यह संख्या घटकर 28,278 हो गई। यह एक सकारात्मक संकेत है लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। साल 2022 के बाद से शिकायतों की संख्या में कमी देखी गई है। जब 30,864 शिकायतें प्राप्त हुई थी, जो 2014 के बाद से सर्वाधिक आंकड़ा था। जहां तक बात महिलाओं की सुरक्षा की आती है तो पिछले कुछ वर्षों में भारत ने अभूतपूर्व निर्णयों से महिलाओं की सुरक्षा के लिए कई प्रबंध किये हैं। आज भारत में महिलायें पहले की अपेक्षा ज्यादा सुरक्षित है।

हम एक तरफ महिलाओं को हर क्षेत्र में बराबरी का दर्जा देकर उन्हे आगे बढ़ा रहें है। वहीं दूसरी तरफ उनके साथ अत्याचार की घटनाओं में भी लगातार बढ़ोतरी हो रही है। आये दिन हमें महिलाओं के साथ बलात्कार, दुर्व्यवहार होने की घटनाये सुनने को मिलती रहती है। ऐसी घटनाओं से महिला सशक्तिकरण के अभियान को धक्का लगता हैं ।देश में महिलाओं के प्रति खराब होते माहौल को बदलने की जिम्मेदारी सिर्फ सरकार की ही नहीं अपितु हर आम आदमी की भी है। हम सभी को आगे आकर महिला सुरक्षा की लड़ाई में महिलाओं का साथ देना होगा तभी देश की मातृ शक्ति सर उठा कर शान से चल सकेगीं। अब महिलाओं को समझना होगा कि आज समाज में उनकी दयनीय स्थिति समाज में चली आ रही परम्पराओं का परिणाम है। इन परम्पराओं को बदलने का बीड़ा स्वयं महिलाओं को ही उठाना होगा। तभी समाज में उनके प्रति सोच बदल पायेगी।

सरायकेला नगर अध्यक्ष द्वारा स्टेडियम में सब्जी बाजार लगवाने के प्रयास का जनता ने किया तीव्र विरोध

लोग एवं खेल प्रेमी सड़क पर उतरे, कार्यपालक अधिकारी, एस डी एम मामले की गंभीरता को भांपा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला। सरायकेला राजबाड़ा कालखंड में 1889 में स्थापित सरायकेला स्टेट की उस नगर पालिका संप्रति पंचायत के नवनिर्वाचित अध्यक्ष मनोज चौधरी के निर्देश पर साप्ताहिक हाट के सामने सड़क किनारे लगने वाली सब्जी बाजार को बिरसा मुंडा स्टेडियम परिसर में स्थानांतरित करने का प्रयास शुक्रवार को विवाद का कारण बन गया । इस निर्णय की जानकारी मिलते ही स्थानीय लोगों,नेता , युवा पीढ़ी और खेल प्रेमियों ने मौके पर पहूंच कर इसका कड़ा विरोध करना आरंभ कर दिया ।परिणाम यह हुआ कि सब्जी विक्रेताओं को स्टेडियम के अंदर दुकान लगाने नहीं दिया गया।इस कारण दुर दराज से आये गरीब किसान , विशेष कर गांव की महिलाएं जो अपने खेत से पांच -दस किलो सब्जी भाजी सर पर लेकर बाजार पहुंचती हैं उन्हें काफी समय तक ऊहापोह स्थिति में देखा गया ।मामला जो भी हो विरोध का स्वर शान्त करने नतो पुलिस नाही प्रशासन पहुंच पाई थी , हालाकी समय सुबह का था ।

विरोध का तेवर इतना जोरदार रहा कि नगर पंचायत के कार्यपालक अधिकारी को जब इसकी खबर मिला वे मामले की गंभीरता भांपने के साथ सीधे एस डी एम कार्यालय जा पहुंचे और इस संदर्भ में गुफ्तगू की ।

हालांकि शाम तक सभी स्थित पूर्व की तरह सामान्य हो गई और सब्जी विक्रेताओं ने खुलकर सड़क के किनारे अपनी सब्जी की दुकान लगाई ।अधिकांश जो बाहरी व्यापारी थे । सच तो यह है कि इस महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्टेडियम राजे राजबाडे समय जहां मोहन बगान , मोहम्मडन स्पोटिंग तथा अंग्रेज लोग भी कोलकाता आकर खेलते थे उनकी गूंज अंग्रेज सरकार के कानों तक थी , विजय बाबू का उस स्टेडियम पर सब्जी बाजार लोगों को रास नहीं आई और वे भड़क गये ।फिर क्या था परिसर में सब्जी बाजार लेजाने व लगाने का खबर जैसे ही लोगों को मिला तब विरोध शुरू हो गया । विरोध के चलते विक्रेताओं को वहां बैठने से रोक दिया गया ।इस पर सरायकेला के प्रथम विधायक के भतीजे अधिवक्ता एवं समाजसेवी जलेश कवि ने कहा कि ऐतिहासिक एसएफसी (Serailkella Football Ground)मैदान, जिसे वर्तमान में बिरसा मुंडा स्टेडियम के नाम से जाना जाता है, लंबे समय से खेल गतिविधियों का प्रमुख केंद्र रहा है और यहां प्रतिदिन खिलाड़ी अभ्यास करते हैं। ऐसे में स्टेडियम परिसर का उपयोग सब्जी मंडी के रूप में करना उचित नहीं है। उन्होंने प्रशासन से स्थानीय लोगों और व्यवसायियों की भावनाओं का सम्मान करने की अपील की। विरोध जताने वाले में भाजपा के राजा सिंहदेव, सुदीप पटनायक ,बद्रीनारायण दारोगा, लिपू महंती, बीजू दत्त एवं कई खेल प्रेमी शामिल हो कर जोरदार विरोध जताया । सभी ने एक स्वर में स्टेडियम परिसर में सब्जी मंडी लगाने का विरोध जब किया तब स्थानीय लोगों का साथ उन्हें मिला। उन्होंने सामूहिक तौर पर कहा कि बिरसा मुंडा स्टेडियम पहले राजघराने के संरक्षण में था फिर में इसे बिरसा मुंडा स्टेडियम के रुप मे नामकरण किया गया। उन्होंने कहा कि यह स्टेडियम यहां के भावनाओं के साथ जुड़ा हुआ है। इस स्टेडियम ने कई राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों को जन्म दिया है ,इसके साथ छेड़छाड़ करना यहां की धर्म संस्कृति और परंपरा के साथ छेड़ छाड़ नहीं होने देगें ।जिसे कभी बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

वहीं नगर पंचायत के नवनिर्वाचित अध्यक्ष मनोज चौधरी ने कहा कि स्टेडियम के नाम पर अनावश्यक राजनीति किया जा रहा है। उनके अनुसार योजना स्टेडियम के अंदर नहीं बल्कि बाहरी हिस्से में अस्थायी रूप से सब्जी विक्रेताओं को बैठाने की थी, ताकि सड़क पर लगने वाले बाजार से होने वाली भीड़ और यातायात की समस्या को नियंत्रित किया जा सके।

अमृतसर टैनटशॉपकीपर एसोसिएशन के प्रतिनिधिमंडल नगर निगम कमिश्नर से मांग करते हुए कहा कि निगम की दुकानों के किराए में की गई भारी बढ़ोतरी को लेकर जलद ही मांग पत्र देगा:

अमृतसर,6मार्च,(साहिल बेरी)

अमृतसर टैनटशॉपकीपर एसोसिएशन के प्रतिनिधिमंडल नगर निगम कमिश्नर से मांग करते हुए कहा कि निगम की दुकानों के किराए में की गई भारी बढ़ोतरी को लेकर जलद ही निगम कमिशनर को मांग पत्र सौंपा जाऐगा । प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई एसोसिएशन के प्रधान राजेश कुमार गांधी और तेजिंदर सिंह एडवोकेट ने की। इस दौरान उन्होंने बताया कि पिछले कई महीनों से निगम की दुकानों के किराए में की गई भारी बढ़ोतरी के कारण किरायेदार दुकानदारों में भारी रोष पाया जा रहा है। दुकानदारों का कहना है कि नगर निगम द्वारा किराए में लगभग 900 प्रतिशत तक बढ़ोतरी कर दी गई है, जो उनके लिए देना संभव नहीं है। एसोसिएशन के प्रधान राजेश कुमार गांधी और तेजिंदर सिंह एडवोकेट ने कमिश्नर मे मांग करते हुए कहा कि फैसले से छोटे दुकानदारों पर आर्थिक बोझ बढ़ गया है और उनके कारोबार पर भी बुरा असर पड़ रहा है। उन्होंने मांग की कि वर्ष 2023 में जो किराया निर्धारित था,

विधायक डॉ. जसबीर सिंह संधू द्वारा वार्ड नंबर 1 में सड़क निर्माण कार्य का शुभारंभ

आम आदमी पार्टी की सरकार जनता की सेवा के लिए हमेशा तत्पर – विधायक संधू

अमृतसर, 6 मार्च (साहिल बेरी):

विधानसभा क्षेत्र अमृतसर पश्चिम में विकास कार्यों की श्रृंखला को जारी रखते हुए विधायक डॉ. जसबीर सिंह संधू ने वार्ड नंबर 1 में एयरपोर्ट रोड स्थित गली मलिक साहिब वाली में सड़क निर्माण कार्य का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए विधायक डॉ. जसबीर सिंह संधू ने कहा कि इलाके के निवासियों की लंबे समय से मांग थी कि मलिक साहिब वाली सड़क का निर्माण करवाया जाए। सड़क की खराब हालत के कारण लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था। उन्होंने कहा कि क्षेत्र के लोगों की इस लंबे समय से लंबित मांग को पूरा करते हुए आज इस सड़क के निर्माण कार्य की शुरुआत की गई है। उन्होंने कहा कि जल्द ही इस सड़क का निर्माण पूरा कर दिया जाएगा, जिससे इलाके के लोगों को बड़ी राहत मिलेगी।

विधायक संधू ने कहा कि पंजाब सरकार द्वारा पूरे राज्य में तेज़ी से विकास कार्य करवाए जा रहे हैं और आम आदमी पार्टी की सरकार जनता की सेवा के लिए हमेशा तत्पर है। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा लोगों को मुफ्त बिजली, बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं और उच्च स्तर की शिक्षा प्रदान की जा रही है। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी की सरकार के दौरान जिस प्रकार के विकास कार्य हो रहे हैं, वैसे पहले किसी सरकार के समय नहीं हुए। उन्होंने कहा कि सरकार बिना किसी भेदभाव के हर वर्ग को सुविधाएं प्रदान कर रही है।

इस मौके पर वार्ड नंबर 1 के काउंसलर प्रभ उप्पल, काउंसलर अमरजीत गुमटाला, पीए माधव शर्मा, पीए अमरजीत सिंह सहित बड़ी संख्या में स्थानीय निवासी उपस्थित थे।

अमृतसर में सीमा पार से चल रहे हथियार तस्करी के मॉड्यूल का पर्दाफाश; नाबालिग समेत छह व्यक्ति पांच पिस्तौलों सहित गिरफ्तार

– आगे की जांच जारी; आने वाले दिनों में और गिरफ्तारियां और बरामदगियां होने की संभावना: सीपी अमृतसर गुरप्रीत भुल्लर

अमृतसर, 6 मार्च (साहिल बेरी)

मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के निर्देशों के अनुसार पंजाब को सुरक्षित बनाने के लिए चल रही मुहिम के दौरान बड़ी सफलता हासिल करते हुए अमृतसर कमिश्नरेट पुलिस ने पांच आधुनिक पिस्तौलों और एक तेजधार हथियार समेत छह व्यक्तियों, जिनमें एक नाबालिग है, को गिरफ्तार कर सीमा पार से अवैध हथियारों की तस्करी करने वाले मॉड्यूल का पर्दाफाश किया है। यह जानकारी आज यहां पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) पंजाब गौरव यादव ने दी।

गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों की पहचान रोहित कुमार (18) निवासी मकबूलपुरा, अमृतसर; करनबीर सिंह उर्फ अजय (24) निवासी गांव काले तरनतारन; जश्नदीप सिंह उर्फ ज्ञानी (18), ओंकार सिंह उर्फ वंश (21) और आकाशदीप सिंह (24), तीनों निवासी गांव मरी मेघा, तरनतारन तथा 16 वर्षीय नाबालिग के रूप में हुई है। बरामद किए गए हथियारों में एक .30 बोर, एक 9 एमएम ग्लॉक, एक .30 बोर पीएक्स5, एक 9 एमएम टॉरस और एक 9 एमएम ग्रेटा (पाकिस्तान में निर्मित) तथा 34 जिंदा कारतूस शामिल हैं।

डीजीपी गौरव यादव ने कहा कि प्रारंभिक जांच से पता चला है कि गिरफ्तार किए गए मुलजिम सोशल मीडिया के माध्यम से पाकिस्तान आधारित तस्करों के संपर्क में थे और ड्रोन के जरिए सीमा पार से हथियारों की खेप प्राप्त करते थे। उन्होंने आगे बताया कि आरोपी व्यक्ति अपने हैंडलरों के निर्देश पर हथियारों की खेप प्राप्त कर विभिन्न क्षेत्रों में उनकी आपूर्ति करते थे।

डीजीपी ने कहा कि पूरे नेटवर्क का पर्दाफाश करने के लिए इस मामले में आगे-पीछे का पता लगाने के लिए जांच जारी है।

कमिश्नर ऑफ पुलिस (सीपी) अमृतसर गुरप्रीत सिंह भुल्लर ने कार्रवाई के संबंध में विवरण साझा करते हुए कहा कि गश्त और संदिग्ध व्यक्तियों की चेकिंग के दौरान तेजी से कार्रवाई करते हुए पुलिस टीमों ने रोहित कुमार को एक नाबालिग समेत काबू कर उनके कब्जे से एक .30 बोर पिस्तौल और एक तेजधार हथियार बरामद किया।

उन्होंने कहा कि पूछताछ के दौरान गिरफ्तार मुलजिमों ने खुलासा किया कि यह अवैध हथियार उन्हें करनबीर उर्फ अजय ने सप्लाई किया था। उन्होंने आगे बताया कि इस जानकारी पर कार्रवाई करते हुए पुलिस टीमों ने उक्त मुलजिम को गिरफ्तार कर लिया।

सीपी ने कहा कि करनबीर उर्फ अजय से आगे की जांच और पूछताछ कर हथियार सप्लायरों को गिरफ्तार किया गया, जिनकी पहचान ओंकार सिंह उर्फ वंश, आकाशदीप सिंह और जश्नदीप उर्फ ज्ञानी के रूप में हुई है और उनके पास से चार अन्य पिस्तौल बरामद हुए हैं। उन्होंने आगे कहा कि इस संबंध में आगे की जांच जारी है।

इस संबंध में थाना मकबूलपुरा अमृतसर में आर्म्स एक्ट की धारा 25 (6,7,8) के तहत एफआईआर नंबर 59 दिनांक 28-02-2026 दर्ज की गई है।

विश्व महिला दिवस को समर्पित जिला शिक्षा कार्यालय में स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

कार्यक्रम में विभिन्न विभागों की महिला कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया

अमृतसर, 6 मार्च (साहिल बेरी)

विश्व महिला दिवस के अवसर पर महिलाओं को स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता प्रदान करने के उद्देश्य से जिला प्रशासनिक परिसर अमृतसर स्थित जिला शिक्षा कार्यालय (एलिमेंटरी) में अमनदीप अस्पताल की ओर से एक विशेष स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में जिला प्रशासनिक परिसर के विभिन्न विभागों से संबंधित महिला कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

यह कार्यक्रम उपायुक्त अमृतसर श्री दलविंदरजीत सिंह के दिशा-निर्देशों के तहत जिला शिक्षा अधिकारी (एलिमेंटरी) श्री कंवलजीत सिंह संधू तथा श्री राजेश कुमार शर्मा के नेतृत्व में आयोजित किया गया।

इस अवसर पर अमनदीप ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स की डॉ. नैना महिंदरत्ता विशेष रूप से उपस्थित हुईं। उन्होंने उपस्थित महिला कर्मचारियों को विश्व महिला दिवस की शुभकामनाएं देते हुए महिलाओं में कैंसर की रोकथाम तथा नियमित स्वास्थ्य जांच के महत्व के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि बीमारियों से बचाव के लिए समय-समय पर स्वास्थ्य जांच करवाना आवश्यक है। साथ ही उन्होंने कहा कि आज की व्यस्त जीवनशैली में स्वस्थ रहने के लिए पौष्टिक और ताजा भोजन के साथ-साथ नियमित व्यायाम भी बेहद जरूरी है। डॉ. महिंदरत्ता ने यह भी कहा कि स्वास्थ्य में किसी भी प्रकार की समस्या होने पर तुरंत नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र या अस्पताल से संपर्क करना चाहिए।

इस अवसर पर राजेश खन्ना (उप जिला शिक्षा अधिकारी), परमिंदर सिंह सरपंच (जिला मीडिया कोऑर्डिनेटर), अमृतपाल कौर (मीडिया इंचार्ज, अमनदीप अस्पताल), राखी शर्मा (मार्केटिंग एग्जीक्यूटिव), अवनीत कौर, परमिंदर कौर (स्टेनो), कंवलजीत कौर (तरनतारन), जगदीप कौर (वेरका), हरनूर कौर (गुरदासपुर), संजना, नरेंद्र कौर, मनप्रीत कौर, सुनीता कुमारी, शिवानी (जूनियर इंजीनियर), मनजीत कौर, वरिंदरजीत कौर, सुखविंदर कौर, ज्योति महाजन, तृप्ता देवी, बिपनीत कौर, दीपाली, प्रभजोत कौर, सपना रंधावा सहित बड़ी संख्या में महिला कर्मचारी उपस्थित रहीं।

श्रीमणि ने दिल्ली में मनाया 10वां स्थापना दिवस — "फ़िनटेनिटी" "के साथ डिजिटल

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली: भारत की अग्रणी डिजिटल वित्तीय सेवा कंपनी श्रीमणि ने अपना 10वां स्थापना दिवस "फ़िनटेनिटी" थीम के साथ दिल्ली स्थित सनराईज पार्टी हॉल में भव्य रूप से मनाया। इस अवसर पर सहयोगी कंपनियाँ (डिजिसेवा) एवं सरल टेक्नोलॉजी की अनुभवी टीम, चैनल पार्टनर्स तथा विभिन्न गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि थीं डॉ ममतामयी प्रियदर्शनी

स्टेट चेयरपरसन इंडियन इंडस्ट्रीज एस्सोसिएसन दिल्ली उन्होंने अपने संबोधन में श्रीमणि द्वारा ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों में डिजिटल वित्तीय समावेशन के क्षेत्र में किए जा रहे उल्लेखनीय कार्यों की सराहना की तथा एमएसमी एवं एग्री-उद्यमिता के क्षेत्र में विस्तार हेतु महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए।

कार्यक्रम में एमएसमी मेंटर, सीए , हेमेंद्र गुप्ता ,डिजिसेवा के सी ई ओ, सीए, सुधीर झा, ग्रुप ऑफ़ कंपनी के सीएफओ, सीए, जय राम ,तथा सीटीओ कंपनी की वर्तमान उपलब्धियाँ:दस प्लस राज्यों में संचालन पचास प्लस समर्पित टीम सदस्य दसहजार सक्रिय चैनल पार्टनर्स

डिजिटल बैंकिंग, बीमा, बिल पेमेंट, क्रेडिट रिपोर्ट एवं फिनटेक सेवाओं में मजबूत उपस्थिति भविष्य का विज़न:

श्रीमणि का लक्ष्य आने वाले वर्षों में भारत के प्रत्येक पिन कोड तक डिजिटल वित्तीय सेवाएँ पहुँचाना है, जिससे ग्रामीण एवं वंचित वर्ग को सशक्त बनाया जा सके। कंपनी के फाउंडर एंड डायरेक्टर ने अपने सम्बोधन में कहा

"यह दस वर्षों की यात्रा केवल व्यवसायिक सफलता नहीं, बल्कि विश्वास, पारदर्शिता और डिजिटल सशक्तिकरण का परिणाम है। हम 'दस से अनंत तक' के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहे हैं।"समारोह के अंत में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले टीम सदस्यों एवं चैनल पार्टनर्स को सम्मानित भी किया गया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023